गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत... 11 नवम्बर से 17 नवम्बर 2018

# गुरुत्व ज्योतिष

साप्ताहिक ई-पत्रिका

## सूर्य उपासना का अद्भुत पर्व सूर्य षष्ठी

**Nonprofit Publications**

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष
साप्ताहिक ई-पत्रिका
11 नवम्बर से
17 नवम्बर 2018


संपादक

चिंतन जोशी



संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
www.gurutvakaryalay.in
http://gk.yolasite.com/
www.shrigems.com
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/



पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी,
गुरुत्व कार्यालय


## गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका में लेखन हेतु फ्रीलांस (स्वतंत्र) लेखकों का स्वागत हैं...✍

गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका में आपके द्वारा लिखे गये मंत्र, यंत्र, तंत्र, ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, फेंगशुई, टैरों, रेकी एवं अन्य आध्यात्मिक ज्ञान वर्धक लेख को प्रकाशित करने हेतु भेज सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।


GURUTVA KARYALAY
BHUBNESWAR-751018, (ODISHA) INDIA
Call Us: 91 + 9338213418,
91 + 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in,
gurutva.karyalay@gmail.com

# अनुक्रम



## स्थायी और अन्य लेख

प्रिय आत्मिय,

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

हिन्दू संस्कृति में कार्तिक शुक्ल षष्ठी की तिथि को छठ पर्व, सूर्य षष्ठी पूजा के रुप में मनाया जाता है। भारत के विभिन्न प्रांत में में पुरातन काल से ही सूर्य उपासना का यह अद्भुत पर्व अत्यंत लोकप्रिय रहा हैं। क्योकि हमारे विद्वान ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पहले यह ज्ञात कर लिया था की, सूर्य जड़-चेतन सभी जीव-जंतु, पेड़-पौधे के लिए जीवन या उर्जा का प्रमुख स्त्रोत है। भारतीय के अलावा विश्व की अन्य पुरातन विकसित संस्कृतियां भी विभिन्न माध्यम से सूर्य की पूजा-अर्चना या अन्य उपायों से सूर्य के प्रति अपनी कृतज्ञता विभिन्न माध्यम से प्रकट करते आये हैं।

पौराणिक मान्यता है कि सूर्य की उर्जा का मुख्य स्रोत उनकी पत्नीयां उषा और प्रत्यूषा हैं। इस लिए छठ पूजा में सूर्य के साथ उनकी दोनों पत्नियों की भी आराधना होती है। इस लिए प्रात: काल में सूर्योदय काल में सूर्य के साथ उषा का और संध्याकाल में सूर्यास्त के समय में प्रत्यूषा को अर्घ्य देकर दो पत्नीयों का भी पूजन किया जाता है। सूर्य को समर्पित इस छठ पर्व के पूजन हेतु साक्षात भगवान सूर्यनारायण की उपासना से व्रतकर्ता को सुख-शंति, समृद्धि एवं मनोवांछित कामनाओं की पूर्ति हेतु कामना की जाती हैं। सूर्य षष्ठी के दिन संध्या में श्रद्धालु किसी पवित्र नदी-तालाब के किनारे नदी में स्नान कर भीगे वस्त्रों में डूबते सूरज को अर्घ्य देते हैं। फिर अगले दिन उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ ही छठ की पूजा संपन्न मानी जाती है। सूर्य षष्ठी व्रत से संबंधित विभिन्न कथाएं प्रचलित हैं, पाठको की जानकारी हेतु इस अंक में हमनें कुछ विशेष कथाओं को संकलित करने का प्रयास किया है।

पौराणिक कथा के अनुसार, भगवान के पुत्र साम्ब(शाम्ब) हुए । वह कुष्ठ रोगी हो गया था। साम्ब(शाम्ब) ने कुष्ठ से मुक्ति के लिए भगवान सूर्य की जगहों पर 12 सूर्य उपासना के तीर्थों और उसके निकट तालाब का निर्माण कराया था। साम्ब(शाम्ब) इन्हीं तीर्थों में पूजा अर्चना कर व उससे लगे तालाब में स्नान कर कुष्ठ रोग से मुक्त हुआ था। आज भी छठ महापर्व स्नान कर कुष्ठ रोग दूर होता है। चार दिनों का महापर्व चार दिनों तक चलने वाला यह महापर्व बेहद आस्था, निष्ठा व पवित्रता के साथ मनाया जाता है।



आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो परमात्मा की कृपा

आपके परिवार पर बनी रहे। परमात्मा से यही प्राथना हैं...

चिंतन जोशी

## ***** साप्ताहिक ई-पत्रिका से संबंधित सूचना *****

- ई-पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- ई-पत्रिका में वर्णित लेखों को नास्तिक/अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- ई-पत्रिका के लेख आध्यात्म से संबंधित होने के कारण भारतिय धर्म शास्त्रों से प्रेरित होकर प्रस्तुत किया गया हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित लेख से संबंधित किसी भी विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- ई-पत्रिका में प्रकाशित जानकारीकी प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव की जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ई-पत्रिका से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- ई-पत्रिका से संबंधित किसी भी प्रकार की आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- ई-पत्रिका से संबंधित लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर दिए गये हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले धार्मिक, एवं मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी मंत्र- यंत्र या अन्य उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- ई-पत्रिका से संबंधित जानकारी को माननने से प्राप्त होने वाले लाभ, लाभ की हानी या हानी की जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक की नहीं हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी जानकारी एवं मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या कवच, मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- ई-पत्रिका में गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रकाशित सभी उत्पादों को केवल पाठको की जानकारी हेतु दिया गया हैं, कार्यालय किसी भी पाठक को इन उत्पादों का क्रय करने हेतु किसी भी प्रकार से बाध्य नहीं करता हैं। पाठक इन उत्पादों को कहीं से भी क्रय करने हेतु पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

# सूर्य उपासना का अद्भुत पर्व सूर्य षष्ठी

संकलन गुरुत्व कार्यालय

भारतीय संस्कृति में कार्तिक शुक्ल षष्ठी की तिथि को छठ पर्व, सूर्य षष्ठी पूजा के रुप में मनाया जाता है। भारत के विभिन्न प्रांत में में पुरातन काल से ही सूर्य उपासना का यह अद्भुत पर्व अत्यंत लोकप्रिय रहा हैं। क्योकि हमारे विद्वान ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पहले यह ज्ञात कर लिया था की, सूर्य जड़-चेतन सभी जीव-जंतु, पेड़-पौधे के लिए जीवन या उर्जा का प्रमुख स्त्रोत है। भारतीय के अलावा विश्व की अन्य पुरातन विकसित संस्कृतियां भी विभिन्न माध्यम से सूर्य की पूजा-अर्चना या अन्य उपायों से सूर्य के प्रति अपनी कृतज्ञता विभिन्न माध्यम से प्रकट करते आये हैं।

पौराणिक मान्यता है कि सूर्य की उर्जा का मुख्य स्रोत उनकी पत्नीयां उषा और प्रत्यूषा हैं। इस लिए छठ पूजा में सूर्य के साथ उनकी दोनों पत्नियों की भी आराधना होती है। इस लिए प्रात: काल में सूर्योदय काल में सूर्य के साथ उषा का और संध्याकाल में सूर्यास्त के समय में प्रत्यूषा को अर्घ्य देकर दो पत्नीयों का भी पूजन किया जाता है।

सूर्य को समर्पित इस छठ पर्व के पूजन हेतु साक्षात भगवान सूर्यनारायण की उपासना से व्रतकर्ता को सुख-शंति, समृद्धि एवं मनोवांछित कामनाओं की पूर्ति हेतु कामना की जाती हैं।

सूर्य षष्ठी के दिन संध्या में श्रद्धालु किसी पवित्र नदी-तालाब के किनारे नदी में स्नान कर भीगे वस्त्रों में डूबते सूरज को अर्घ्य देते हैं। फिर अगले दिन उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ ही छठ की पूजा संपन्न मानी जाती है।

## भगवान राम से जुड़ी पौराणिक कथा

एसी मान्यता है कि चौदह वर्षों के वनवास के पश्चात भगवान राम, सीता और लक्ष्मण के साथ कार्तिक अमावस्या के दिन अयोध्या लौटे थे इस लिए इस दिन दीपावली मनाई जाती है। भगवान राम के वापस आने की खुसी में उनके राज्य में घी के दिये जलाए गए थे। भगवान राम के राज्याभिषेक के बाद, राम राज्य की कल्पना करके रामजी और सीताजी ने

कार्तिक शुक्ल षष्ठी के दिन व्रत-उपवास रखकर सूर्य की आराधना करके सप्तमी के दिन व्रत पूर्ण किया था। सरयू तट पर राम-सीता के इस अनुष्ठान से प्रसन्न होकर भगवान सूर्यदेव ने उन्हें आशीर्वाद दिया था। मान्यता हैं तब से छठ पर्व मनाया जा रहा है।

## श्रीकृष्ण के पुत्र से जुड़ी पौराणिक कथा

पौराणिक कथा के अनुसार, भगवान श्रीकृष्ण की आठवीं पत्नी जाम्बवंती से पुत्र साम्ब(शाम्ब) हुए । एक बार साम्ब(शाम्ब) सुबह की बेला में स्नान कर रहे थे, तभी गंगाचार्य ऋषि की नजर साम्ब(शाम्ब) पर पड़ गई। यह देख ऋषि गंगाचार्य आगबबूला हो गए और शाम्ब को कुष्ठ से पीड़ित होने का श्राप दे दिया। जिससे वह कुष्ठ रोगी हो गया था। तब नारद जी ने श्राप से मुक्ति के लिए उन्हें 12 स्थानों पर सूर्य मंदिर की स्थापना कर सूर्य की उपासना का उपाय बताया। देवर्षि नारद जी के कथन से साम्ब(शाम्ब) ने कुष्ठ से मुक्ति के लिए भगवान सूर्य की उपासना का संकल कर, 12 माह में 12 जगहों पर 12 सूर्य उपासना के तीर्थों और उसके निकट तालाब का निर्माण कराया था। जो इस प्रकार हैं देवार्क, लोलार्क, उलार्क, कोणार्क, पुवयार्क, अंजार्क, पंडार्क, वेदार्क, मार्कंडेयार्क, दर्शनार्क, बालार्क व चाणर्क। साम्ब(शाम्ब) इन्हीं सूर्य उपासना केंद्रों में पूजा अर्चना कर व उससे लगे तालाब में स्नान कर कुष्ठ रोग से मुक्त हुआ था। आज भी छठ महापर्व करने वालों की आस्था है कि छठ मइया के प्रताप से कुष्ठ रोगी निरोग हो जाता है। चार दिनों का महापर्व चार दिनों तक चलने वाला यह महापर्व बेहद आस्था, निष्ठा व पवित्रता के साथ मनाया जाता है।

## विश्वामित्र से जुड़ी पौराणिक कथा

अन्य मान्यता के अनुसार कार्तिक शुक्ल षष्ठी के दिन सूर्यास्त एवं सप्तमी के दिन सूर्योदय के मध्य भगवान सूर्य की आराधना करते हुए विश्वामित्र के मुख से आकस्मिक रुप से वेदमाता गायत्री प्रकट हो गई थीं तभी से कार्तिक शुक्ल षष्ठी की तिथि को छठ पर्व मनाया जा रहा है।

## पांडव से जुड़ी पौराणिक कथा

एक अन्य मान्यता है कि जुए में पांडव अपना राजय हार कर जंगल में भटक रहे थे, इस संकट से मुक्ति पाने के लिए स्वयं द्रौपदी ने सूर्यदेव की आराधना करते हुए छठ का व्रत किया था। सूर्यदेव की प्रसन्नता से पांडवों को आना खोया राजय, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा सब पुनः प्राप्त हुआ।

## महर्षि मनु के पुत्र से जुड़ी पौराणिक कथा

एक अन्य कथा के अनुसार महर्षि मनु के पुत्र राजा प्रियव्रत को विवाह के पश्च्यात अधिक समय बीत जाने के बाद भी कोई संतान नहीं हुई, तो महर्षि कश्यप ने पुत्रेष्टि यज्ञ का आयोजन कराकर उनकी पत्नी को प्रसाद दिया। यज्ञ के प्रभाव व ऋषि के प्रसाद से रानी को गर्भ ठहर गया, लेकिन रानी ने एक मृत पुत्र को जन्म दिया, जिसे देखकर रानी उस क्षण ही मूर्च्छित हो गईं। प्रियव्रत ने भी प्राण त्यागने का निश्चय किया और मृत शिशु को लेकर श्मशान की दिशा में निकल गए। उसी समय षष्ठी देवी वहां प्रकट हुईं। राजा ने मृत शिशु को जमीन पर रखकर, देवी को प्रणाम किया। देवी ने राजा को षष्ठी व्रत करने का उपाय बताया और मृत शिशु को पुनः जीवित कर दिया। राजा शिशु पुत्र को लेकर घर वापस लौट गये और विधि-विधान से षष्ठी देवी का पूजन किया।

## स्कंध से जुड़ी पौराणिक कथा

एक अन्य कथा के अनुसार देवी गंगा ने एक स्कंध बालक को जन्म दिया और उसे सरकंडे के वन में रख दिया। उसी वन में छह कार्तिकाएं निवास करती थीं। उन सब छह कार्तिकाओं ने उस स्कंध बालक का लालन-पालन किया। यह स्कंध बालक को छह कार्तिकाओं ने बड़ा किया या यह बालक उन्हें कार्तिक के माह में मिला था इस कारण उस स्कंध बालक का नाम आगे कार्तिकेय पड़ गया। इसी कारण ये छह कार्तिकाएं,

कार्तिकेय की षष्ठ माताएं (छठ माता या छठी मईया ) कही गईं। पौराणिक ग्रंथों में यह व्रत स्कंध षष्ठी के नाम से वर्णित है।

## कार्तिकेय से जुड़ी पौराणिक कथा

एक अन्य कथा के अनुसार, असुरों के विनाश के लिए देवाताओं ने देवी पार्वतीजी व भगवान शंकरजी के पुत्र कार्तिकेयजी को अपना सेनापति निर्धारित किया था। देवी पार्वती ने अपने पुत्र के विजय प्राप्ति की कामना हेतु डूबते हुए सूर्य को अर्ध्य देकर पूजन कर और निर्जला व्रत किया। कार्तिकेयजी के विजयी होकर लौटने पर देवी पार्वती ने उदय होते सूर्य को विधि-विधान से अर्ध्य देकर अपना व्रत तोड़ा था।

## वृद्धा के पुत्र से जुड़ी पौराणिक कथा

सूर्य षष्ठी व्रत की अन्य कथा एक वृद्धा की कोई संतान नहीं थी। कार्तिक शुक्ल सप्तमी के दिन उसने संकल्प किया कि यदि उसके यहां पुत्र होगा तो वह यह सूर्य षष्ठी का व्रत करेगी। सूर्य भगवान की कृपा से उसे पुत्र की हो गयी, लेकिन वृद्धाने सूर्य षष्ठी का व्रत नहीं किया। लड़का बड़ा होगया, उसकी विवाह योग्य उम्र हो गायी। वृद्धा ने लड़के का विवाह करवा दिया। एक बार वृद्धा लड़का ओर उसकी पत्नी घर लौटते समय वर-वधू ने एक जंगल में विश्राम के लिए रुक गये । लेकिन नवविवाहित वधू ने वहां अपने पति को पालकी में मृत अवस्था में पाया। उसे देख नववधू विलाप करने लगी, जिसे सुनकर एक वृद्धा स्त्री उसके पास आकर बोली, मैं छठ माता हूं। तुम्हारी सास सदैव मुझसे अपनी कामना पूर्ति करवाती रहीं है, लेकिन तुम्हारी सास ने संकल्प करके भी कभी भी मेरा पूजन-व्रत नहीं किया। लेकिन तुम्हारा, विलाप देखकर में तम्हारे पति को जीवित कर देती हूं। तुम घर जाकर अपनी सास से इस विषय में बात करना, उससे यह व्रत विधि-विधान से संपन्न कराना। छठ माता ने उसके पति को जीवित कर दिया। घर जाकर वधू ने अपनी सास को संपूर्ण घटना बताई, तो सास को अपनी गलती का अहसास हुआ और उसने आगे से विधि-विधान से सूर्य षष्ठी का व्रत करने का पुनः संकल्प लिया था।

## सूर्य षष्ठी पर्व का वैज्ञानिक महत्व

विद्वानों का कथन हैं की सूर्य षष्ठी पर्व की परंपरा में बहुत ही गहरा वैज्ञानिक महत्व छिपा है। एसा देखा गया है की षष्ठी तिथि के आसपास के दिनों में एक विशेष खगोलीय बदलाव देखे जाते है, इस दौरान सूरज की अल्ट्रावाइलेट किरणों की मात्रा सामान्य से अधिक होती है। सूरज की अल्ट्रावाइलेट किरणों के कुप्रभावों से रक्षण करने का सामर्थ्य इस सूर्य षष्ठी पर्व की परंपरा में है।

***

# सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

**कवच के प्रमुख लाभ**: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

# हर कष्ट दूर होते हैं हनुमान चालीसा और बजरंग बाण के पाठ से

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

आज हर व्यक्ति अपने जीवन मे सभी भौतिक सुख साधनो की प्राप्ति के लिये भौतिकता की दौड मे भागते हुए किसी न किसी समस्या से ग्रस्त है। एवं व्यक्ति उस समस्या से ग्रस्त होकर जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता है। व्यक्ति उस समस्या से अति सरलता एवं सहजता से मुक्ति तो चाहता है पर यह सब केसे होगा? उस की उचित जानकारी के अभाव में मुक्त हो नहीं पाते। और उसे अपने जीवन में आगे गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं होता। एसे मे सभी प्रकार के दुख एवं कष्टों को दूर करने के लिये अचुक और उत्तम उपाय है हनुमान चालीसा और बजरंग बाण का पाठ।

## हनुमान चालीसा और बजरंग बाण ही क्यु ?

क्योकि वर्तमान युग में श्री हनुमानजी शिवजी के एक एसे अवतार है जो अति शीघ्र प्रसन्न होते है जो अपने भक्तो के समस्त दुखो को हरने मे समर्थ है। श्री हनुमानजी का नाम स्मरण करने मात्र से ही भक्तो के सारे संकट दूर हो जाते हैं। क्योकि इनकी पूजा-अर्चना अति सरल है, इसी कारण श्री हनुमानजी जन साधारण मे अत्यंत लोकप्रिय है। इनके मंदिर देश-विदेश सवत्र स्थित हैं। अतः भक्तों को पहुंचने में अत्याधिक कठिनाई भी नहीं आती है। हनुमानजी को प्रसन्न करना अति सरल है

हनुमान चालीसा और बजरंग बाण के पाठ के माध्यम से साधारण व्यक्ति भी बिना किसी विशेष पूजा अर्चना से अपनी दैनिक दिनचर्या से थोडा सा समय निकाल ले तो उसकी समस्त परेशानी से मुक्ति मिल जाती है।

**"यह नातो सुनि सुनाइ बात है ना किसी किताब मे लिखी बात है, यह स्वयं हमारा निजी एवं हमारे साथ जुडे लोगो के अनुभत है।"**

## उपयोगी जानकारी

- हनुमान चालीसा और बजरंग बाण के नियमित पाठ से हनुमान जी की कृपा प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए प्रस्तुत हैं कुछ उपयोगी जानकारी ..
- नियमित रोज सुभह स्नान आदिसे निवृत होकर स्वच्छ कपडे पहन कर ही पाठ का प्रारम्भ करे।
- नियमित पाठ में शुद्धता एवं पवित्रता अनिवार्य है।
- हनुमान चालीसा और बजरंग बाण के पाठ करते समय धूप-दीप अवश्य लगाये इस्से चमत्कारी एवं शीघ्र प्रभाव प्राप्त होता है।
- दीप संभव न होतो केवल ३ अगरबत्ती जलाकर ही पाठ करे।
- कुछ विद्वानो के मत से बिना धूप से हनुमान चालीसा और बजरंग बाण के पाठ प्रभाव हिन होता है।
- यदि संभव हो तो प्रसाद केवल शुद्ध घी का चढाए अन्य था न चढाए
- जहा तक संभव हो हनुमान जी का सिर्फ़ चित्र (फोटो) रखे।

- यदि घर मे अलग से पूजा घर की व्यवस्था हो तो वास्तुशास्त्र के हिसाब से मूर्ति रखना शुभ होगा। नही तो हनुमान जी का सिर्फ़ चित्र (फोटो) रखे।
- यदि मूर्ति हो तो ज्यद बडी न हो एवं मिट्टी कि बनी नही रखे।
- मूर्ति रखना चाहे तो बेहतर है सिर्फ़ किसी धातु या पत्थर की बनी मूर्ति रखे।
- हनुमान जी का फोटो/ मूर्ति पर सुखा सिंदूर लगाना चाहिए।
- नियमित पाठ पूर्ण आस्था, श्रद्घा और सेवा भाव से की जानी चाहिए। उसमे किसी भी तरह की संका या संदेह न रखे।
- सिर्फ़ देव शक्ति की आजमाइस के लिये यह पाठ न करे।
- या किसी को हानि, नुक्सान या कष्ट देने के उद्देश्य से कोइ पूजा पाठ नकरे।
- एसा करने पर देव शक्ति या इश्वरीय शक्ति बुरा प्रभाव डालती है या अपना कोइ प्रभाग नहि दिखाती! एसा हमने प्रत्यक्ष देखा है।
- एसा प्रयोग करने वालो से हमार विनम्र अनुरोध है कृप्या यह पाठ नकरे।
- समस्त देव शक्ति या इश्वरीय शक्ति का प्रयोग केवल शुभ कार्य उद्देश्य की पूर्ति के लिये या जन कल्याण हेतु करे।
- ज्यादातर देखा गया है की १ से अधिक बार पाठ करने के उद्देश्य से समय के अभाव मे जल्द से जल्द पाठ कने मे लोग गलत उच्चारण करते है। जो अन उचित है।
- समय के अभाव हो तो ज्यादा पाठ करने कि अपेक्षा एक ही पठ करे पर पूर्ण निष्ठा और श्रद्घा से करे।
- पाठ से ग्रहों का अशुभत्व पूर्ण रूप से शांत हो जाता है।

यदि जीवन मे परेशानीयां और शत्रु घेरे हुए है एवं आगे कोइ रास्ता या उपाय नहीं सुझ रहा तो डरे नही नियमित पाठ करे आपके सारे दुख-परेशानीयां दूर होजायेगी अपनी आस्था एवं विश्वास बनाये रखे।

***

# वास्तु: मानसिक अशांति निवारण उपाय

संकलन गुरुत्व कार्यालय

आज की भागदौड़ से भरी जिंदगी मैं हर व्यक्ति अपने काम में व्यस्त हैं। जिस कारण से अधिकतर लोग मानसिक शांति से ग्रस्त होते है। व्यस्ता एवं भौतिकता से भरी दिनचार्या में व्यक्ति के पास अपने स्वयं के लिए भी वक्त ही नहीं होता है। यदि आप इस तरह की परेशानी से ग्रस्त हैं और आप मानसिक कष्ट तनाव इत्यादी से मुक्ति चाहते हैं, तो इस वास्तु सुझावो को जीवन में अवश्य आजमाकर देख ले आपको निश्चित लाभ प्राप्त होगा।

* अपने शयन कक्ष में रात में झूठे बर्तन न रखें। सोने से पूर्व बर्तनो को साफ करले। इससे स्त्री वर्ग का स्वास्थ्य प्रभावित होता हैं व धन का अभाव बना रहता हैं।

* मानसिक तनाव हो, जाए तो कमरे में शुद्ध घी का दीपक जला कर रखें।
* शयन कक्ष में झाड़ू इत्यादि सफाई की सामग्री न रखें। इससे व्यर्थ की चिंता रहेगी।
* यदि मानसिक तनाव अधिक हो जाएं तो, तकिए के नीचे लाल चंदन रखकर सोएं लाभ प्राप्त होगा।
* सुबह-संध्या पूजन में घी और कपूरका दिप अवश्य जलाये। जिससे निवास स्थान या व्यवसायिक स्थानो से नकारात्मक उर्जा दूर होती हैं।
* शास्त्रोक्त नियमो के अनुशार संध्या समय अर्थात धूप-दिप के समय सोना, खाना, स्नान करना वर्जित माना गया हैं। अतः इन कार्यो को करने से त्यागदे।
* संध्या समय अर्थात धूप-दिप के समय हाथ-पैर धो सकते हैं।
* धूप-दिप के समय अपने निवास स्थान या व्यवसायिक स्थानो पर सुगंधित व पवित्र अगरबत्ति, धुप इत्यादि अवश्य करें।

* अपने शयन कक्ष में रात में झूठे बर्तन न रखें। सोने से पूर्व बर्तनो को साफ करले। इससे स्त्री वर्ग का स्वास्थ्य प्रभावित होता हैं व धन का अभाव बना रहता हैं।
* मानसिक तनाव हो, जाए तो कमरे में शुद्ध घी का दीपक जला कर रखें।
* शयन कक्ष में झाड़ू इत्यादि सफाई की सामग्री न रखें। इससे व्यर्थ की चिंता रहेगी।
* यदि मानसिक तनाव अधिक हो जाएं तो, तकिए के नीचे लाल चंदन रखकर सोएं लाभ प्राप्त होगा।
* सुबह-संध्या पूजन में घी और कपूरका दिप अवश्य जलाये। जिससे निवास स्थान या व्यवसायिक स्थानो से नकारात्मक उर्जा दूर होती हैं।
* शास्त्रोक्त नियमो के अनुशार संध्या समय अर्थात धूप-दिप के समय सोना, खाना, स्नान करना वर्जित माना गया हैं। अतः इन कार्यो को करने से त्यागदे।
* संध्या समय अर्थात धूप-दिप के समय हाथ-पैर धो सकते हैं।
* धूप-दिप के समय अपने निवास स्थान या व्यवसायिक स्थानो पर सुगंधित व पवित्र अगरबत्ति, धुप इत्यादि अवश्य करें।

# जप माला का महत्व

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

धर्म शास्त्रों में माला को विशेष महत्व दिया गया हैं। देवी-देवता को प्रसन्न करने हेतु शास्त्रों में माला का विशेष महत्व बताया गया हैं। मन्त्र साधना में भी माला का विशेष महत्व बताया गया हैं। क्योकि मन्त्र साधना की पूर्ण क्रिया एवं सफलता माला पर निर्भर होती हैं। मन्त्र के जप के समय मन्त्रोच्चारण की गणना माला पर करना सुविधाजनक और सरल होता हैं।

विद्वानो का कथन हैं की मन्त्र जप एवं इष्ट सिद्धि के लिए यदि निश्चित माला का प्रयोग किया जाए तो वह अधिक कारगर होता हैं। क्योकि संबंधित देवी-देवता की प्रिय वस्तु या पदार्थ से बनी होने के कारण एवं उस में कुछ विशेष गुण होने से माला शीघ्र फल प्रदान करने वाली होती हैं।

माला का मूल लाभ होता हैं की मन्त्रों की गणना आसानी से हो सके और दूसरा लाभ होता हैं शास्त्रों में वर्णित हैं की किसी माला विशेष से मन्त्र जाप करने से मन्त्र जाप का प्रभाव कई गुना बढ जाता हैं। आपके मार्गदर्शन के लिए शास्त्रोक्त मत भी संलग्न किए गए हैं।

**प्रमुख ग्रंथकारो ने माला के तीन प्रकार बताये हैं।**

1) कर माला

2) वर्ण माला

3) मणि माला

## कर माला:

कर माला जप उसे कहते हैं जिस में मन्त्र का जप उँगलियों के पोरों पर निश्चित क्रम में किया जाता हैं, इस जप में पर्व के क्रम पर विशेष ध्यान रखना पड़ता हैं। इस लिये लम्बी अवधि की साधना या मन्त्र जप के लिये यह उपयुक्त नहीं हैं। जब मन्त्र जप हजारों - लाखों की संख्या में करने हो तो कर माला पर करना कष्ट प्रद होता हैं। कर माला का प्रयोग दैनिक जप में या छोटी संख्या के जप में किया जाता हैं। कर माला से मन्त्र जप करने के कुछ शास्त्रोक्त नियम बताए गए हैं।

अनामिका के मध्य भाग से नीचे की ओर गिने, फिर कनिष्ठा के मूल से अग्रभाग तक। इसके बाद अनामिका और मध्यमा के अग्रभाग होकर तर्जनी के मूल तक गिनती करें। इस प्रकार से अनामिका के दो, कनिष्ठा के तीन, पुनः अनामिका का एक, मध्यमा का एक, और तर्जनी के तीन पर्व कुल मिलाकर दस संख्या होती हैं।

### इस विषय में शास्त्रोक्त मत हैं:-

*आरम्भ्यानामिका मध्यम् पर्वानयुक्तान्यनुक्रमात्।*
*तर्जनीमूलपर्यन्तं जपेद्दशसु पर्वसु॥*
*मध्यमांगुलिमूले तु यतपर्व द्वितयं भवेत्।*
*तं वैं मेरुं विजानीयज्जाप्पेतं नातिलंघयेत्॥*

**अर्थात:** उँगुली के मध्य पर्व (पोर) से आरम्भ कर के क्रम से 10 पर्वों पर बराबर जपे। लेकिन मध्यम अंगुली के जड़ के दो पर्वों को छोड़ दे, क्योंकि वे अंगुली के मेरु हैं और जप में मेरु का लंघन नहीं किया जाता हैं।

कर माला के इस क्रम से प्रायः सभी विद्वान सहमत हैं। लेकिन विभिन्न अनुष्ठानो एवं साधनाओं के अन्तर होने पर क्रम में बदलाव संभव हैं।

### देवी अनुष्ठान:

कुछ विशेष देवी अनुष्ठानो में अनामिका के दो पर्व, कनिष्ठा के तीन, पुनः अनामिका के अग्रभाग का एक,
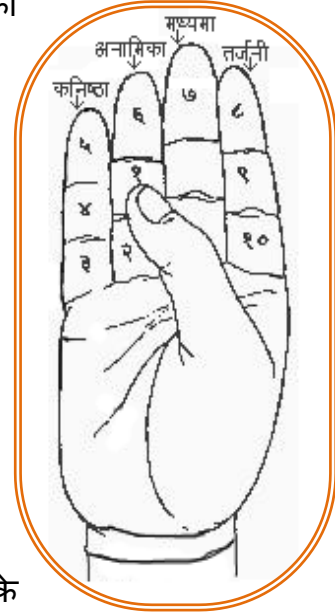
मध्यमा के तीन, और तर्जनी के मूल का एक पर्व कुल मिलाकर दस संख्या होती हैं।

### लक्ष्मी अनुष्ठान:

मन्त्र साधना के जानकार एवं विद्वानो के मत से कुछ विशेष लक्ष्मी अनुष्ठा में मध्यमा के मूल में एक, अनामिका के मूल में एक, कनिष्ठा के तीन, अनामिका और मध्यमा के एक-एक अग्रभाग और तर्जनी के तीन इर अप्रकार कुल मिलाकर दस संख्या पूर्ण होती हैं।

### कर माला पर मन्त्र जप के नियम:

- कर माला पर जप करते समय उंगलियां परस्पर एक दूसरे से जुड़ी हुई रखे, अलग-अलग न रखें।
- हथेली को थोड़ी अंदर की तरफ मुड़ी हुई रखे।
- कर माला करते समय मेरु का उल्लंघन न करें। मध्यमा के दो पर्व को मेरु कहा जाता हैं।
- कर माला करते समय पर्वो की संधि का स्पर्श निषिद्ध माना गया हैं।
- हाथो को हृदय के सामने उंगलियों को थोड़ी झुकाकर और वस्त्र से ढककर ही जप करना चाहिए।
- दस की संख्या में किए जाने वाले जप की गिनती करने के लिए लाख अर्थात लक्ष, सिन्दूर और गौ के सूखे कंडे (उपले) का चूर्ण कर के इन सबके मिश्रण की गोलियां बनाकर उन्से गणना करनी चाहिए।
- अक्षत, उंगली, पुष्प, चन्दन, मिट्टी, कंकड़ आदि का प्रयोग दशकों की गणना हेतु करना वर्जित हैं।

### वर्णमाला:

वर्णमाला का प्रयोग अन्तर जप और बहिर जप दोनो प्रकार के जप में समान रुप से किया जाता हैं।

वर्णमाला जप अर्थात अक्षरों के अक्षरों के दवारा अंख्या की गणना करना। इसके जप करने का विधान यह हैं कि पहले वर्णमाला का एक अक्षर बिन्दु लगाकर उच्चारण करें, फिर मन्त्र का, जिसके कारण मन्त्र जप की कूल संख्या 50 होगी।

अ वर्ग के = 16
क से प तक के = 25
य से ह तक के = 8
पुनः एक लकार = 1

कुल 50

**अ वर्ग के सोलह वर्ण इस प्रकार हैं:-**

*अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः*

**क वर्ग से प वर्ग तक के पच्चीस वर्ण इस प्रकार हैं:-**

*क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म*

**य वर्ग से ह कार तक आठ वर्ण इस प्रकार हैं:-**

*य र ल व श ष स ह*

**लकार (ळकार) का एव वर्ण हैं:-**

*ळ*

इस प्रकार पचार की संख्या हो जाने पर फिर लकार से लौटकर अकार तक आने पर पचास और हो जायेंगे, इस प्रकार कुल मिलाकर सौ की संख्या पूर्ण हो जाती हैं।

- वर्ण माला में **"क्ष"** को सुमेरु माना जाता हैं अतःअ इसका उल्लंघन निषिद्ध हैं।
- संस्कृत में **"त्र"** और **"ज्ञ"** को स्वतंत्र अक्षर नहीं माने जाते सयुक्त अक्षर माने जाते हैं। इस लिए इन अक्षरों की गणना नहीं की जाती।

इस कारण गणना में सात वर्ग की जगह आठ वर्ग होते हैं। आठवां वर्ग "शकार" से प्रारंभ होता हैं। इसके द्वारा " अं कं चं टं तं पं यं शं" यह गणना करके आठ बार और जप करना चाहिए।

इस प्रकार जप की संख्या 108 हो जाती हैं।

इसे अक्षर माला के मणि माना जाता हैं। इनका मूल सूत्र कुण्डलिनी शक्ति हैं, जो मूलाधार चक्र से आज्ञाचक्र तक सूत्र रुप में विद्यमान हैं। इस प्रकार यह जप आरोह-अवरोह अर्थात उपर से नीचे तथा पुनः नीचे से ऊपर होता हैं। इस प्रकार किया हुआ जप पूर्ण एवं शीघ्र सिद्धि प्रदान करने वाला होता हैं।

## मणिमाला:

जिन साधकों को अधिक संख्या में जप करने हो, उन्हें मणिमाला का प्रयोग करना चाहिए। इस माला को मणियों से अर्थात मनिया या मनकों से पिरोई होने के कारण ही इसे मणिमाला कहा जाता हैं। यह माला कई पदार्थों से बनी हुई होती हैं। मणिमाला रत्न, रुद्राक्ष, तुलसी, चंदन, शंख, कमलगट्टा (कमल बीज), सुवर्ण, चांदी, कुशमूल, स्फटिक, मोती, हल्दी, पुत्रजीवा की बीज इत्यादि पदार्थों की मालाएं सामान्यतः प्रयोग की जाती हैं।

सामान्यतः वैष्णवों के लिए तुलसे तथा शैवों, शाक्तों के लिए रुद्राक्ष की माला सर्वोत्तम मानी गई हैं। लेकिन इस बात का ध्यान रहें की एक पदार्थ की माला में दूसरे पदार्थ का प्रयोग न किया गया हों।

- मन्त्र जप के लिए संबंधित देवी-देवता से संबंधित पदार्थ की माला का प्रयोग करना शीघ्र फल प्रदान करने वाला होता हैं।
- अलग-अलग कामनापूर्ति, मन्त्र साधना या अनुष्ठा में शीघ्र सफलता प्राप्त हो इस लिए भी अलग-अलग पदार्थों की माला का प्रयोग करना चाहिए।
- माला के मनके(दाने) एक समान आकार के हो, छोटे बड़े न हों।
- माला में कुल 108 मनको के साथ 1 सुमेरु अलग से होना चाहिए।
- शास्त्रोक्त विधान के अनुसार माला में प्रयोग होने वाला धागा कुंवारी ब्राह्मण कन्या द्वारा सूत कातकर बनाया बनागा गया हों, तो शीघ्र फलदेने वाला होता है ।
- रुद्राक्ष के दानों की माला बनाते समय मनके पिरोते समय रुद्राक्ष के मुहं और पुच्छ का विशेष ध्यान रखना चाहिए। रुद्राक्ष में मुहं का भाग कुछ ऊँचा होता है और पुच्छ का भाग नीचा होता हैं। रुद्राक्ष के मनके पिरोते समय रखना चाहिये की दो रुद्राक्ष के दानों के मुहं से मुहं परस्पर मिलते हों, और पुच्छ से पुच्छ परस्पर मिलते हों।
- वशीकरण में रक्त वर्ण के सूत की माला का प्रयोग करें, शांति कर्म में सफेद(श्वेत) वर्ण के सूत की माला, अभिचार कर्म में कृष्ण वर्ण अर्थात काले वर्ण के सूत की माला का प्रयोग करना लाभदायक होता हैं। ऐश्वर्य एवं संपत्ति की प्राप्ति के लिये रेशमी सूत से बनी माला का प्रयोग करना चाहिए।
- कुछ विद्वानो का मत हैं की ब्राह्मण वर्ग के लोगो कों श्वेत वर्ण के सूत की माला, क्षत्रिय वर्ग के लोगो कों रक्त वर्ण के सूत की माला, वैश्य वर्ग के लोगो कों पीत वर्ण के सूत की माला और शूद्रों वर्ग के लोगो कों कृष्ण वर्ण के सूत की माला का प्रयोग करना श्रेष्ठ होती हैं।

- रक्त वर्ण के सूत से बनी माला का प्रयोग सब वर्णों के लोग प्रायः सभी प्रकार के अनुष्ठान में कर सकते हैं।
- दों मनको के बीच में गांठ लगाई हुई माला प्रयोग और बिना गांठ लगी माला का प्रयोग समान रुप से किया जा सकता हैं।
- माला को सोने-चांदी के तार में भी गूंथ कर बनाया जा सकता हैं।
- सुमेरु के पार गांठ तीन फेरे की या ढाई फेरे के लगानी चाहिए।
- माला का प्रत्येक मनका पिरोते समय इष्ट मन्त्र का जप या **"ॐ"** का उच्चारण करते रहना चाहिए।

विशुद्ध दोषरहीत उपयुक्त माला की प्राप्ति के बाद या माला का विधिवत निर्माण कार्य संपन्न हो जानेके पश्चयात मालाका संस्कार अवश्य करना या करवा लेना चाहिये।

# अंग फड़कने से शुकन अपशुकन

संकलन गुरुत्व कार्यालय

- मानव शरीर के विभिन्न अंगों में कभी कभी फड़क होती हैं।
- अंग फड़क्ने का कारण मानव शरीर में उतपन्न होने वाले वायु-विकार आदि के कारण शरीर कि माशपेशी में रह रहकर थोडा उभरना और दबना बताया जाता हैं।
- हमारे भारत में अंगो के फड़कने के आधार पर शुभ-अशुभ ज्ञात करने की धारणा सालो से प्रचलित रही हैं।
- प्रायः पुरुष का दाहिना (Right) अंग और स्री का बांया (Left) अंग फड़कना शुभ माना जाता हैं।
- यदि बाएं पैर की पहली और आखिरी उंगली फड़के, तो लाभ होता हैं।
- यदि दाएं पैर की पहली और आखिरी उंगली फड़के तो अशुभ होता हैं।
- यदि पांव की पिंडलीयां फड़कने से काम में बाधा उतपन्न होती हैं एवं यह शत्रु द्वारा परेशानी का संकेत हैं। दायां घुटना फड़के, तो अशुभ फल कि प्राप्ति और बायां फड़के, तो शुभ फल कि प्राप्ति होती हैं।
- यदि बायां पैर फड़कना शुभ होता हैं, दायां पैर फड़कने से मुसीबतों का अंत होने का संकेत हैं।
- यदि बाईं जांघ के फड़कने से दोस्त से सहायता मिलने का संकेत हैं।
- यदि दाईं जांघ फड़कने से शत्रु शांत होने का संकेत हैं।
- यदि दाएं हाथ का अंगूठा फड़कने से शुभ समाचार मिलने का संकेत हैं।
- यदि बाएं हाथ का अंगूठा फड़कने से हानी होने का संकेत हैं।
- यदि यदि मस्तक फड़के तो भूमि लाभ मिलने का संकेत हैं।
- यदि यदि कंधा फड़के तो भोग-विलास में वृद्धि होने का संकेत हैं।
- यदि दोनों भौंहों के मध्य भाग में फड़कन होतो सुख प्राप्ति का संकेत हैं।
- यदि कपाल फड़के तो शुभ कार्य होने का संकेत हैं।
- यदि आँख का फड़कना धन प्राप्ति का संकेत हैं।
- यदि आँख के कोने फड़के तो आर्थिक उन्नति होने का संकेत हैं।
- यदि आँखों के पास का हिस्सा फड़के तो प्रिय व्यक्ति से मिलन होने का संकेत हैं।
- यदि हाथों का फड़कना उत्तम कार्य द्वारा धन प्राप्ति का संकेत हैं।
- यदि वक्षःस्थल का फड़कना विजय प्राप्ति का संकेत हैं।
- यदि हृदय फड़के तो इष्ट सिद्धी प्राप्त होने का संकेत हैं।
- यदि नाभि के फड़क्ने से स्त्री वर्ग को हानि होने का संकेत हैं।
- यदि पेट का फड़कना कोष वृद्धि होने का संकेत हैं।
- यदि गुदा का फड़कना वाहन सुख कि प्राप्ति का संकेत हैं।
- यदि कण्ठ के फड़कने से ऐश्वर्य लाभ कि प्राप्ति का संकेत हैं।
- यदि मुख के फड़कने से मित्र द्वारा लाभ होने का संकेत हैं।
- यदि होठों का फड़कना प्रिय वस्तु की प्राप्ति का संकेत हैं।

# रत्नों का अद्भुत रहस्य

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

## पन्ना

बुध का रत्न पन्ना बुध ग्रह के शुभ फलों की प्राप्ति हेतु धारण किया जाता हैं।

पन्ना को बुध का रत्न माना गया है। पन्ना बुध ग्रह का प्रतिनिधि रत्न माना जाता है

इसे विभिन्न नामों से पुकारा जाता है-

**हिन्दी मे :-** पन्ना

**सस्कृत मे :-** पन्ना, मरकत, पाचि, गुरुत्मत, हरितमणि, गरुडांकित गरतारि, सौपर्णि, गरुड़ोदूर्गीर्ण आदि नाम से जाना जाता हैं।

**फ़ारसी मे :-** जमुईद, जमरन,

**अंग्रेजी :-** एमराल्ड

पन्ना रत्न को अति प्राचीन बहुप्रचलित व मूल्यवान माना जाता हैं। पन्ना मूल रुप से बैरूज जाति के पत्थर में से एक विशिष्ठ जाति का पत्थर होता हैं। उत्तम गुणो वाला पन्ना हरी मखमली घास के समान अति सुन्दर हरे रंग का होता हैं। पन्ना गहरे हरे रंग से लेकर हल्के हरे रंग का होता हैं। जानकारो की माने तो पन्ना पीले व गुलाबी रंग का भी पाया जाता हैं। लेकिन गहरे हरें रंग के पन्न सर्वश्रेष्ठ होते हैं।

पन्ना भारत में अधिकतर अजमेर व उदयपुर के अलाव अन्यस्थानो से प्राप्त होता हैं। विदेशों में पन्ना रुस, पाकिस्तान, कोलम्बिया (अमेरिका), ब्राजील, रोडेशिया(अफ्रीका), मिस्र, सेन्डेवान(अफ्रीका), मेडागास्कर आदि स्थानों से प्राप्त होता हैं।

कोलम्बिया के पन्ना की मांग आज बाजारो में सर्वाधिक हैं। पन्ना पारदर्शी और अपारदर्शी दोनों तरह के होते है। कम मूल्य के पारदर्शी पन्ना रत्न में प्रायः बादल जैसा रेशा या हल्का-सा जाला होता हैं, दोष रहित पन्ना कम ही प्राप्त होते हैं इस लिये दोष रहित पन्ना का मूल्य अंतराष्ट्रित बाजारो में अधिक होता हैं।

**पन्ना मुख्यतः पांच रंगों में पाया जाता है**

1. मयूरपंख के रंग के समान रंग का
2. हरे पानी के रंग के समान रंग का
3. सरसों के पुष्प के समान रंग का
4. हल्का शेन्डूल पुष्प के समान रंग का
5. तोते के पंख के समान हरे रंग का

### पन्ना धारण करने से लाभ:

- पन्ने का विशेष गुण हैं की वह धारण कर्ता में उत्तेजना एवं मादक भाव पैदा करता हैं।
- इस लिये पूरातन काल में राजा-महाराजा पन्ने के बने गिलासों में शराब पीया करते थे एसी मान्यता हैं की पन्ने के बने गिलासों शराब पीने से शराब का नशा कई गुना बढ़ जाता हैं।
- पन्ना धारण करने से नेत्ररोग एवं ज्वरनाशक होता हैं।
- पन्ना सन्निपात, दमा, फोडे आदि व्याधियों को को दूर करता हैं।
- पन्ना धारण कर्ता के शरीर में बल एवं वीर्य की वृद्धि करता हैं।
- पन्ना धारण करने से व्यक्ति का चंचल चित्त शांत व संयमित हो जाता हैं। जिससे व्यक्ति को मानसिक शांति प्राप्त होती हैं और व्यक्ति का मन एकाग्र हो जाता है।
- पन्ना काम, क्रोध आदि विकारों को शांत कर व्यक्ति को असीम सुख शान्ति प्रदान करता हैं।
- विद्या अध्ययन से जुड़े व्यक्ति को मन की उत्तम एकाग्रता एवं कुशाग्र बुद्धि की प्राप्ति हेतु पन्ना अवश्य धारण करना चाहिए।

## मान्यता:

- पन्ना की और देखने से आँखों को शीतलता महसूस होती हैं।
- असली पन्ने को लकड़ी पर रगड़ने से इसकी चमक में वृद्धि होती है।
- असली पन्ने पर पानी की बूंद रखने से बूंद पन्ना पर बनी रहती है, फैलती नहीं हैं।
- इसमें भंगुरता होने के कारण यह जोर से ठोकर लगने पर या गिरने से टूट सकता है।
- पन्ना को सूर्य की रोशनी मे देखने से हरे रंग की छाया निकलती है |
- कांच के गिलास में पानी भर कर पन्ना को इस गिलास में डाल देने से पानी से हरे रंग की किरणे स्फूरीत होती हैं।

## रोग और पन्ना:

- पन्ना धारण करने से शारीरिक बल एवं सौदर्य में वृद्धि होती हैं।
- पन्ना बुखार, उल्टी, विष, बवासीर इत्यादि रोगो में अति लाभदायक हैं।
- पथरी, मूत्र रोग आदि में पन्ना की भस्म लाभदायक होती हैं।

## पन्ना के दोष

- विद्वानो के मत से पन्ना में विशेष कर निम्न दोष पाए जाते हैं, अतः दोष-युक्त पन्ना कभी भी धारण नहीं करना चाहिए। दोष युक्त पन्ना धारण करने से लाभ के स्थान पर हानि हो सकती हैं।
- जिस पन्ने का रंग सोने के समान हो या उसका मुख पीले रंग का हो, तो इस प्रकार के पन्ना को धारण करने से सभी प्रकार से हानिकारक सिद्ध होता हैं।
- जिस पन्ने में रक्त वर्ण के लाल छींटे हो ऐसा पन्ना धारण करने से सुख-सम्पति को नष्ट हो जाती हैं।
- शहद के रंग के समान रंग वाला पन्ना धारण करना माता-पिता के लिए हानिकारक होता हैं।
- जिस पन्ने में पीले रंग के छींटे हो ऐसा पन्ना धारण करने से संतान पक्ष के लिए हानिकारक होता हैं।
- जिस पन्ने में दो से अशिक रंग हो, एसा पन्ना धारण करने से व्यक्ति के बल, वीर्य और बुद्धि का नाश करने वाला होता हैं।
- जिस पन्ने में जाल जैसी रेखाओं का समूह हो ऎसा पन्ना धारण करना स्वास्थ्य के लिए हानि होता हैं।
- जो पन्ना देखने में चमकहीन हो, उल्टा देखने से सुन्न सा उदास या चमकहीन दिखाई देता हों, ऎसा पन्ना धारण करने से धनहानि होती हैं।
- जिस पन्ने में छोटी-छोटी टूटी हुई धारियों दिखे, ऎसा पन्ना धारण करने से वंशवृद्धि हेतु हानि करता हैं।
- जिस पन्ने में गड्ढा हो, ऎसा पन्ना धारण करने से आकस्मिक दुर्घट्ना होने की संभावना को बढाता हैं।
- जिस पन्ने में काले धब्बे दिखाई देते हों, ऎसा पन्ना धारण करना स्त्री के लिए हानिकारक होता हैं।
- जिस पन्ने सीधी रेखा दिखाई देते हों, ऎसा पन्ना धारण करना धन का करने वाला होता हैं।

जिस पन्ने को देख ने से वह खुरदरा दिखाई देता हो या उसका रंग फटा-फटा सा दिखाई देता हो, ऎसा पना धारण करने से हानि होती हैं।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

***

# प्रकृति की अलौकिक देन रुद्राक्ष धारण करने से लाभ

✍ संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

## तीन मुखी रुद्राक्ष:

- तीन मुखी रुद्राक्ष थोडा लंबे आकार में व गोलाकार स्वरुप दोनो स्वरुपों में प्राप्त होता हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष साक्षात अग्नि का स्वरुप हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से गंभिर बीमारियों से रक्षा होती हैं।
- यदि कोई लम्बे समय से रोगग्रस्त हैं तो उसके तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से रोग से शीघ्र मुक्ति मिलती हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करना पीलिया के रोगी के लिए अत्याधिक लाभकारी होता हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से स्फूर्ति, कार्यक्षमता में वृद्धि होती हैं।
- जानकारों के मतानुशार तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से स्त्री हत्या इत्यादि पापों का नाश होता हैं। कुछ विद्वानो का मत हैं की तीन मुखी रुद्राक्ष ब्रह्म हत्या के पाप को नाश करने में भी समर्थ हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से शीत ज्वर दूर होता हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अद्भुत विद्या की प्राप्ति होती हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करना मंदबुद्धि बच्चों के बौधिक विकास के लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध होता हैं।
- निम्न रक्तचाप को दूर करने में भी तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभदायक होता हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष धारण करने से अग्निदेव की कृपा प्राप्त होती हैं।
- तीन मुखी रुद्राक्ष से अग्नि भय से रक्षण होता हैं।

**तीनमुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-**

*ॐ रं हुं ह्रीं हुं ओं॥*

## चार मुखी रुद्राक्ष:

- चार मुखी रुद्राक्ष साक्षात ब्रहमा का स्वरुप हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से बौधिक शक्ति का विकास होता हैं।
- विद्याध्ययन करने वाले बच्चो के बौधिक विकास एवं स्मरण शक्ति के विकास के लिए चार मुखी रुद्राक्ष उत्तम फलदायि सिद्ध होता हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष धारण करने से वाणी में मिठास आती हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष धारण करने से मानसिक विकार दूर होते हैं।
- विद्वानो का कथन है की चार मुखी रुद्राक्ष के दर्शन एवं स्पर्श से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थो की शीघ्र प्राप्ति होती हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष धारण करने से जीव हत्या के पापों का नाश होता हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष धारण करने से दिव्य ज्ञान की प्राप्ति होती हैं।
- चार मुखी रुद्राक्ष को अभीष्ट सिद्धियों को प्राप्त करने में सहायक व कल्याणकारी हैं।

**चार मुखी रुद्राक्ष को धारण करने का मन्त्र:-**

*ॐ व्रां क्रां तां हां ईं॥*

>> क्रमश: अगले अंक में ...

***

# वर्णमाला के अनुसार स्वप्न फल विचार

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

- स्वप्न में खरोंच लगना शरीर स्वस्थ होने का संकेत है।
- स्वप्न में खटमल देखना जीवन में संघर्ष बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में खटमल मारते देखना कठिनाई से छुटकारा मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में खरबूजा देखना कार्य क्षेत्र में सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में ख़त पढ़ना किसी शुभ समाचार के मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में खरगोश देखना स्त्री से बेवफाई का संकेत है।
- स्वप्न में खलिहान देखना मान-सम्मान बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में खटाई खाते देखना धन हानि होने का संकेत है।
- स्वप्न में खंभा (लोहे का) देखना शीघ्र विवाह होने और कार्य में सफलता मिलने का संकेत हैं।
- स्वप्न में खंभा या मीनार देखना दिर्धायु होने और सुख शान्ति बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में खाली खटिया देखना किसी बीमारी से कष्ट मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में खाली बर्तन देखना कार्य में नुक्शान होन का संकेत है।
- स्वप्न में खिलखिलाते देखना दुखद समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में खिल्ली उडाते देखना स्वजनों से निराशा मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में खिलौना देखना सुख मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में खुजली होते देखना रोग से छुटकारा मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में ख़ुशी मिलते देखना परेशानी बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में खुशबू लगाते देखना सम्मान बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में खून देखना धन लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में खून-खराबा होते देखना सौभाग्य वृद्धि होन का संकेत है।
- स्वप्न में खून की वर्षा होते देखना राज्य या देश में अकाल पड़ने का संकेत है।
- स्वप्न में खून में लुढ़के देखना धन-सम्पति प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में खेल कूद में भाग लेते देखना भाग्योदय होने का संकेत है।
- स्वप्न में खेत देखना दूरस्थ स्थानो की यात्रा एवं विद्या, धन की वृद्धि का संकेत है।
- स्वप्न में खेत काटते देखना पत्नी से मन मुटाव होने का संकेत है।
- स्वप्न में खोपडी देखना बौधिक कार्यो में सफलता मिलने का संकेत है।

- स्वप्न में गधा देखना स्वजनो से प्यार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में गधे पर माल लदा हुआ देखना व्यापार में लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में गधे की चीख निकलते सुनना दुख मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में गधे की सवारी करते देखना शुभ समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में गाय देखना उत्तम धन लाभ प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में गाय या बैल को पीले रंग की देखना राज्य या देश में महामारी होने का संकेत है।
- स्वप्न में गरम पानी देखना बुखार या अन्य बीमारी होने का संकेत है।
- स्वप्न में गंजा सिर देखना परीक्षा में पास होने एवं मान-सम्मान बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में गली देखना, सुनसान गली देखने से लाभ की प्राप्ति का संकेत एवं भीड़-भाड़ वाली गली देखने से मृत्यु का समाचार मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में गवाही देते देखना किसी अपराध में फंसने का संकेत है।
- स्वप्न में गमला देखना, गमला खाली देखने पर झमेले में फसने का संकेत, गमले में फूल खिले देखने पर शुभ संकेत है।
- स्वप्न में गलीचा अथवा क़ालीन देखना या उस पर बैठना किसी प्रियजन के यहाँ शोक में शामिल होने का संकेत है।
- स्वप्न में ग्वाला (दूधवाला) या ग्वालिन (दूधवाली) को देखना शुभ फल मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में गाड़ी देखना यात्रा सफल होने का संकेत है।
- स्वप्न में गाजर देखना खेत में फसल अच्छी होने का संकेत है।
- स्वप्न में गालिया देते देखना समाज में बदनामी होने का संकेत है।
- स्वप्न में गायत्री मंत्र का पाठ करते देखना सकल मनोरथों की पूर्ति एवं सुख समृद्धि बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में गिलास देखना अनावश्यक खर्चो में कटोटी का संकेत है।
- स्वप्न में गिनती करते देखना कार्य में हानि होने का संकेत है।
- स्वप्न में गिरगिट देखना किसी झगडे में फसने का संकेत है।
- स्वप्न में गिलहरी को देखना अत्यंत शुभ संकेत है।
- स्वप्न में गीदढ़ को देखना शत्रु से कष्ट मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में गीली वस्तु देखना लम्बी बीमारी से कष्ट होने का संकेत है।
- स्वप्न में गीता देखना कष्टों से मुक्त एवं शुभ समय आने का संकेत है।
- स्वप्न में गुलाब के फूल देखना मान-सम्मान में वृद्धि का संकेत है।
- स्वप्न में गुड खाते देखना किसी कार्य में सफलता मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में गुडिया देखना शीघ्र विवाह होने का या दांपत्य जीवन में प्रेम बढ़ने का, संतान सुख मिलने संकेत है।
- स्वप्न में गुठली खाते या फेंकते देखना प्रचूर मात्रा में धन लाभ प्राप्त होने का संकेत है।
- स्वप्न में गेंहू देखना कठिन परिश्रम एवं मेहनत से धन लाभ मिलने का संकेत है।
- स्वप्न में गेंद देखना परेशानी बढ़ने का संकेत है।
- स्वप्न में गेंदे का फूल देखना मानसिक अशांति होने का संकेत है।
- स्वप्न में गेरुआ वस्त्र देखना शुभ समय के आगमन का संकेत है।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

# अंक ज्योतिष का रहस्य

संकलन गुरुत्व कार्यालय

गतांक से आगे...

## मूलांक 4 स्वामी राहु

मूलांक 4

स्वामी ग्रह: राहु

मित्र अंक- 1, 5

शत्रु अंक- 1, 7

सम 3,6,8,9

स्व अंक-4

यदि किसी व्यक्ति का जन्म किसी भी मास की4,13,22 व 31 तारीख को हुवा हैं तो उनका मूलांक 4 होता है।

मूलांक 4 अंक के व्यक्ति अधिक क्रोधि एवं तुनकमिजाज लेकिन क्रियाशील विचार धारा वाले होते हैं। व्यक्ति की प्रकृति कार्य क्षेत्र में दूसरें लोगों से विपरीत अधिक साहस पूर्ण होती हैं।

यह मूलांक 4 विषेशतः उथल-पुथल का घोतक हैं। मूलांक-4 वाले व्यक्ति जीवन में शांत होकर बैठ जाएं, यह संभव नहीं हैं। व्यक्ति की प्रकृति के अनुशार उसके भाग्योदय में निरंतर उतार-चढ़ाव होते रहते हैं।

मूलांक 4 का स्वामी ग्रह राहु हैं, इस लिए मूलांक 4 में जन्म लेने वाले व्यक्ति के उपर राहु का विशेष प्रभाव देखने को मिलता हैं, क्योकि 4 मूलांक में जन्म लेने के कारण व्यक्ति के भितर राहु ग्रह की अनुकूलता के कारण राहु ग्रह के गुणों का समावेश अन्य ग्रहों की अपेक्षा अधिक मात्रा में हो जाता हैं। राहु ग्रह के इस विशेष प्रभावि गुणों के कारण ही व्यक्ति के भितर संघर्ष और साहस पूर्ण कार्य करने के विशेष गुण पाये जाते हैं। व्यक्ति की प्रमुखता होती हैं की वह असंभव कार्य और आश्चर्यजनक कार्य को भी पूरा करने में समर्थ होते हैं।

मूलांक 4 के व्यक्ति अन्य लोगों के मुकाबले अधिक संघर्षशील होते हैं, क्योकी यह लोग दूसरों से अलग विचार धारा रखते हैं। व्यक्ति हर किसी से अपनी बात मनवाने का प्रयास करता हैं जिस कारण व्यक्ति के मित्र भी कभी-कभी शत्रु बन जाते हैं।

मूलांक 4 वाले व्यक्ति अच्छे समाज सुधारक, पौराणिक प्रथा का आधुनिक प्रथा में बदने वाले होते हैं। व्यक्ति सामाजिक क्षेत्रों में बदलाव लाने में अग्रणीय होते हैं। व्यक्ति आसानी से किसी से शीघ्र घुल-मिल नहीं पाते लेकिन एक बार किसी से मित्रता करले तो उसे निभाने का प्रयत्न करते हैं।

मूलांक 4 वाले व्यक्ति अपनी गलतियों के कारण जीवन पर्यन्त परेशान रहता हैं, व्यक्ति पर अपने या पराये लोग जल्द विश्चास नहीं कर पाते।

मूलांक 4 वाले व्यक्ति या तो उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर होंगे या फिर पतन के गहरे गर्त में होते हैं। मूलांक 4 वाले व्यक्ति यदि आज उन्नति की पराकाष्ठा पर हैं तो वहीं कल गहरी खाई में होते हैं। व्यक्ति को बार-बार जेल या कोर्ट-कचहरी के चक्कर काटने पड़ते हैं, इस प्रकार की दुयटनाएं अधिकांशत मूलांक 4 वाले व्यक्तियों के जीवन में ही घटित होती हैं।

व्यक्ति अपने जीवन में अपनी गोपनिय नीतियों से अचानक आश्चर्यजनक रुप से प्रगति के शिखर पर होते हैं। व्यक्ति दिन दोगुनि रात चौगुनि रफ्तार से

धन-वैभव प्राप्त करना चाहते हैं। लेकिन व्यक्ति को धन संग्रह करने में कठिनाई होती हैं। व्यक्ति की सोच एवं नजरिया समाज से भिन्न होता हैं इस कारण व्यक्ति को समाज में लोक निंदा, आलोचना एवं विरोध का सामना करना पड़ता हैं।

मूलांक 4 वाले व्यक्ति की सामाजिक कार्य में विशेष रुचि होती हैं इस कारण व्यक्ति को समाज में अच्छा मान-सम्मान एवं ख्याति प्राप्त होती है। व्यक्ति के भितर अद्भुत कार्य दक्षता होने के कारण यह दूसरों के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत बन सकते हैं। व्यक्ति के जीवन में सफलता एवं असफलता प्रायः समान रुप से चलने के कारण मूलांक 4 वाले व्यक्ति अधिकतर चिंतित एवं तनाव ग्रस्त होते देखे जाते हैं। व्यक्ति को समाज में अपना पद-प्रतिष्ठा बनाएं रखने के लिए निरंतर प्रयास रत रहना पड़ता हैं। व्यक्ति हर समय कुछ नया कर दिखाने की चाह रखता हैं, जिसके लिए वह निरंतर नये-नये शोध एवं आविष्कार करने में लगे रहते हैं।

मूलांक 4 वाले व्यक्ति भौतिक सुख साधन एवं ऐशोआराम के पीछे अधिक धन व्यय करते हैं जिस कारण उनके लिए धन संग्रह करना कठिन हो जाता हैं। इस लिए व्यक्ति को यथा संभव अपनें व्ययों पर नियंत्रण करके धन संयच करने पर अधिक ध्यान रखना चाहिए। व्यक्ति को धन संबंधित कार्यों में हिसाब साफ-सुथरा रखना चाहिए अन्यथा दूसरों को दिया गया पैसा या उधारी वापस नहीं मिलेगी और किसी से उधार लिये धन या सामान में हेरा-फेरी इत्यादि करने से बचे अन्यथा जितने मूल्य की हेराफेरी होगी, आपको उस्से कई गुना अधिक का नुकसान उठाना पड़ सकता हैं।

मूलांक 4 वाले व्यक्ति को किसी भी प्रकार के व्यसन और नशे आदि से दूर रहना चाहिए, यदि व्यक्ति को एक बार किसी व्यसन की लत लग जाती हैं तो वह जल्द नहीं छुटती व्यक्ति नशे का गुलाम हो जाता हैं, और अपनी संचित जमा पूंजि को नशे के पीछे ही खर्च कर देता हैं। इसके अलावा व्यक्ति को जुआ, धृत क्रीड़ा, सट्टा, लॉटरी इत्यादि कार्यों से भी दूर रहना चाहिए नहीं तो व्यक्ति इस कार्यों में अपना सब कुछ खो बैठता हैं। व्यक्ति को पापाचार, अनैतिक इत्यादी कार्य करने वाले लोगों से दूर रहना चाहिए और स्वयं भी दूर रहना चाहिए, अन्यथा व्यक्ति किसी और के किये गये षड़यंत्र में शीघ्र फंस सकते हैं या किसी बड़े संकट में बिना वज़ह फंस सकते हैं। व्यक्ति को बिना कारण जेल की हवा खानी पड़ सकती हैं, इस लिए किसी एसे कार्य जो समाज और कानून की नज़रों में अनुचित और अनैतिक हो उससे दूर रहना चाहिए।

व्यक्ति को प्रायः प्रेम प्रसंगों में असफलता, बदनामी, धोखा आदि मिलते हैं, इस लिए व्यक्ति को प्रेम पसंगों में विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। अपना व्यवहार और चरित्र साफ-सुथरा रखें अन्यथा व्यक्ति को अपने प्रेमी के साथ-साथ स्वजनों एवं समाज से विरोध एवं अपमान सहना पड़ सकता हैं।

मूलांक 4 वाले व्यक्ति कभी-कभी इतने स्वार्थी हो जाते हैं की वहं अपने कार्य-उद्देश्य की पूर्ति के लिए उचित-अनुचित, नैतिक-अनैतिक सभी मूल्यों को ताक पर रख देते हैं, और केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति में ही लगे रहते हैं, जिस कारण व्यक्ति को प्रायः समय कार्य क्षेत्र में असफलता का सामना करना पडा़ता हैं। इस लिए मूलांक 4 वाले व्यक्ति यदि अपने स्वभाव तथा विचारधारा में सुधार करते हैं तो व्यक्ति हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

व्यक्ति गुस्सेल या तुनकमिजाज कर्कश स्वभाव के होने के कारण व्यक्ति बात-बात में चिड़ जाते हैं। व्यक्ति के मन से अलग कार्य हो जाने पर ये अपने आपे से बाहर हो जाते हैं। लेकिन जितनी गति से क्रोध चढ़ता हैं, उतनी ही तीव्र गति से वह उतर भी जाता हैं। गुस्से में व्यक्ति अपना आपा खों बेठते हैं और किसे क्या बोलना या कहना चाहिए इस का होश नहीं होता जिस कारण व्यक्ति हर किसी से शत्रुता एवं विरोध कर लेता हैं। व्यक्ति के जीवन में शत्रुओं की कमी नहीं होती, एक शत्रु को परास्त करने पर दस नए शत्रु पैदा हो जायेंगे हैं। व्यक्ति के शत्रु पीठ पीछे कुचक्र रचेंगे, षड़यंत्र करते रहेंगे लेकिन मुंह के सामने कुछ भी नहीं कर पाएंगे।

## शुभ दिन:

शुभ वर्ष 22,31,40,49,58,67,76 वां वर्ष हैं, तिथि 4,13,22,31 वर्ष दायक होती हैं, किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये इन्हीं तिथि का प्रयोग करना चाहिये, इन तिथियों में शनिवार का दिन पड़े तो बहुत वर्ष होता हैं।

## स्वास्थ्यः

व्यक्ति प्रायः रक्त की कमी से पीड़ित रहते हैं। रक्त की कमी से अनेक रोग आ घेरते हैं। ऐसे व्यक्तियों को लोहतत्व युक्त भोजन करना चाहियें। चलने-फिरने तथा ष्वास लेने में कश्ट होना, फैफड़ो की खराबी, अनिद्रा, भ्रम, हिस्ट्रीरीया, शर्दी, पैरों का फटना पैरों में दर्द, पैरों की अन्य बीमारियां होती हैं। गुर्दे से संबंधि रोग भी हो जाते हैं। व्यक्ति मानसिक रूप से भी अस्वस्थ एवं तनावग्रस्त रहता हैं। सिर दर्द भी पाया जाता हैं।

## उपयुक्त आहारः

लौकी, ककड़ी, खीरा, अंगूर, सेब, अनानस, तुलसी, कालीमिर्च एवं हल्दी उपयोंगी हैं। नषीली चीजों से परहेज करें तेज मसालेदार भोजन से बचें, षाकाहार पर अधिक ध्यान दें।

## अनुकूल व्यवसाय:

व्यक्ति इंजीनियर, सेल्समैन, मुनिम ;ब्ण्। द्ध, दारू, स्प्रिट, तेल, केरोसीन, अर्क, ईत्र, वायु सेना, जल-जहाज, रंग कार्य, टेलिफोन, ओपरेटर, कला, दर्जी, स्टेनो, षिल्प कार, विघुत, ठेकेदार, खदान, वकालत, रेलवे, टेलीग्राफी, पत्रकारिता, तम्बाकू, लेखन, संपादन, ट्रांसपोर्ट, राजनीति, ज्योतिष, बीमा, दलाली, पुरातत्व विज्ञान आदि संबंधित कार्यो में अधिक सफल होते हैं।

## शुभ दिशा:

व्यक्ति के लिए नौऋत्य कोण एवं पश्चितम दिशा अनुकूल होती हैं। व्यक्ति के लिए क्रीमरंग, नीला, मिश्रित, खाकी, चमकदार, नीलेरंग के वस्त्र अनुकूल एवं भाग्यशाली होते हैं।

## मूलांक 4 के व्यक्ति के लिए कष्ट निवारक उपाय

- आपका **मूलांक** के स्वामी ग्रह राहु के शुभ प्रभावो की वृद्धि हेतु आप अपनी मध्यमा उंगली में गोमेद धारण कर सकते हैं। अपने पूजा स्थान में प्राण-प्रतिष्ठित राहु यंत्र को स्थापित कर सकते हैं।
- यदि आर्थिक समस्या हो तो प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र का नियमित पूजन करना लाभप्रद रहेगा।

## ग्रह शांति के लिए व्रत उपवास:

**व्रत:** राहु ग्रह के लिए कोई दिन निश्चित नहीं किया गया हैं, इस लिए राहु को प्रसन्न करने हेतु शनिवार के दिन व्रत किया जा सकता हैं। राहु का व्रत करने से शत्रुओं पर विजय प्राप्त हैं, सरकारी कार्यों में सहयोग प्राप्त होता हैं, राहु-केतु से संबंधित सभी रोगो का शमन होता हैं।

## ग्रह शांति के लिए उपयुक्त रुद्राक्ष:

आपका **मूलांक** स्वामी राहु हैं अतः राहु ग्रह के अशुभ प्रभाव को दूर करने और शुभफलों की प्राप्ति के लिए 8 मुखी रुद्राक्ष धारण करना आपके लिए उपयुक्त रहेगा। आप 8 मुखी रुद्राक्ष के साथ में 7 मुखी या 14 मुखी और 9 मुखी रुद्राक्ष धारण करने से भी आपको विशेष शुभ परिणामो की प्राप्ति होगी।

## शांति के लिए दान

**ग्रह:- राहु वार:- शनिवार**

राहु ग्रह कि शांति हेतु काली वस्तु एवं गोमेद, नीला कपड़ा, कंबल, साबूत सरसों (राई), ऊनी कपड़ा, काले तिल व तेल का दान करने से शुभफल कि प्राप्ति होती हैं

## ग्रह शांति के अन्य सरल उपाय:

- माता-पिता एवं बडे-बुजुर्गो का सम्मान करें।
- सत्कर्म करते रहें आपके सभी कार्य स्वतः सिद्धि होते जायेगें।
- भगवान शिव, विष्णु या माँ दुर्गा का स्मरण करते हुवे दिन की शुरुवात करें।
- भोजन करते समय सिर ढक कर न रखें और दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके भोजन न करें।
- किसी से दुर्व्यवहार न करें।

>> क्रमशः अगले अंक में ...

# सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

**कवच के प्रमुख लाभ**: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

# दस महाविद्या पूजन यंत्र

दस महाविद्या पूजन यंत्र को देवी दस महाविद्या की शक्तियों से युक्त अत्यंत प्रभावशाली और दुर्लभ यंत्र माना गया हैं।

इस यंत्र के माध्यम से साधक के परिवार पर दसो महाविद्याओं का आशिर्वाद प्राप्त होता हैं। दस महाविद्या यंत्र के नियमित पूजन-दर्शन से मनुष्य की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती हैं। दस महाविद्या यंत्र साधक की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। दस महाविद्या यंत्र मनुष्य को शक्तिसंपन्न एवं भूमिवान बनाने में समर्थ हैं।

दस महाविद्या यंत्र के श्रद्धापूर्वक पूजन से शीघ्र देवी कृपा प्राप्त होती हैं और साधक को दस महाविद्या देवीयों की कृपा से संसार की समस्त सिद्धियों की प्राप्ति संभव हैं। देवी दस महाविद्या की कृपा से साधक को धर्म, अर्थ, काम व् मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की प्राप्ति हो सकती हैं। दस महाविद्या यंत्र में माँ दुर्गा के दस अवतारों का आशीर्वाद समाहित हैं, इस लिए दस महाविद्या यंत्र को के पूजन एवं दर्शन मात्र से व्यक्ति अपने जीवन को निरंतर अधिक से अधिक सार्थक एवं सफल बनाने में समर्थ हो सकता हैं।

देवी के आशिर्वाद से व्यक्ति को ज्ञान, सुख, धन-संपदा, ऐश्वर्य, रूप-सौंदर्य की प्राप्ति संभव हैं। व्यक्ति को वाद-विवाद में शत्रुओं पर विजय की प्राप्ति होती हैं।

दश महाविद्या को शास्त्रों में आद्या भगवती के दस भेद कहे गये हैं, जो क्रमशः (1) काली, (2) तारा, (3) षोडशी, (4) भुवनेश्वरी, (5) भैरवी, (6) छिन्नमस्ता, (7) धूमावती, (8) बगला, (9) मातंगी एवं (10) कमात्मिका। इस सभी देवी स्वरुपों को, सम्मिलित रुप में दश महाविद्या के नाम से जाना जाता हैं।

# मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमा

| पारद श्री यंत्र | पारद लक्ष्मी गणेश | पारद लक्ष्मी नारायण | पारद लक्ष्मी नारायण |
|---|---|---|---|
| 21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध | 100 Gram | 121 Gram | 100 Gram |
| पारद शिवलिंग | पारद शिवलिंग+नंदि | पारद शिवजी | पारद काली |
| 21 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध | 101 Gram से 5.250 Kg तक उपलब्ध | 75 Gram | 37 Gram |
| पारद दुर्गा | पारद दुर्गा | पारद सरस्वती | पारद सरस्वती |
| 82 Gram | 100 Gram | 50 Gram | 225 Gram |
| पारद हनुमान 2 | पारद हनुमान 3 | पारद हनुमान 1 | पारद कुबेर |
| 100 Gram | 125 Gram | 100 Gram | 100 Gram |

हमारें यहां सभी प्रकार की मंत्र सिद्ध पारद प्रतिमाएं, शिवलिंग, पिरामिड, माला एवं गुटिका शुद्ध पारद में उपलब्ध हैं।

बिना मंत्र सिद्ध की हुई पारद प्रतिमाएं थोक व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं।

ज्योतिष, रत्न व्यवसाय, पूजा-पाठ इत्यादि क्षेत्र से जुडे बंधु/बहन के लिये हमारें विशेष यंत्र, कवच, रत्न, रुद्राक्ष व अन्य दुलभ सामग्रीयों पर विशेष सुबिधाएं उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।


**GURUTVA KARYALAY**

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com

# हमारे विशेष यंत्र

**व्यापार वृद्धि यंत्र:** हमारे अनुभवों के अनुसार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

**भूमिलाभ यंत्र:** भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

**तंत्र रक्षा यंत्र:** किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

**आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र:** अपने नाम के अनुसार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षों के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

**पदौन्नति यंत्र:** पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

**रत्नेश्वरी यंत्र:** रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

**भूमि प्राप्ति यंत्र:** जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

**गृह प्राप्ति यंत्र:** जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

**कैलास धन रक्षा यंत्र:** कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।



## विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

| | | |
|---|---|---|
| श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र) | महालक्ष्मयै बीज यंत्र | कनक धारा यंत्र |
| श्री यंत्र (मंत्र रहित) | महालक्ष्मी बीसा यंत्र | वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र) |
| श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित) | लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र | श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र) |
| श्री यंत्र (बीसा यंत्र) | लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र | अंकात्मक बीसा यंत्र |
| श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र | लक्ष्मी बीसा यंत्र | ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र |
| श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय) | लक्ष्मी गणेश यंत्र | धनदा यंत्र > Shop Online \| Order Now |

# सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका

इस मुद्रिका में मूंगे को शुभ मुहूर्त में त्रिधातु (सुवर्ण+रजत+तांबें) में जड़वा कर उसे शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सर्वसिद्धिदायक बनाने हेतु प्राण-प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त किया जाता हैं। इस मुद्रिका को किसी भी वर्ग के व्यक्ति हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर सकते हैं। यहं मुद्रिका कभी किसी भी स्थिती में अपवित्र नहीं होती। इस लिए कभी मुद्रिका को उतारने की आवश्यक्ता नहीं हैं। इसे धारण करने से व्यक्ति की समस्याओं का समाधान होने लगता हैं। धारणकर्ता को जीवन में सफलता प्राप्ति एवं उन्नति के नये मार्ग प्रसस्त होते रहते हैं और जीवन में सभी प्रकार की सिद्धियां भी शीध्र प्राप्त होती हैं। **मूल्य मात्र- 6400/-**

>> Shop Online | Order Now

(**नोट:** इस मुद्रिका को धारण करने से मंगल ग्रह का कोई बुरा प्रभाव साधक पर नहीं होता हैं।)

**सर्वसिद्धिदायक मुद्रिका के विषय में अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।**

# पति-पत्नी में कलह निवारण हेतु

यदि परिवारों में सुख-सुविधा के समस्त साधान होते हुए भी छोटी-छोटी बातो में पति-पत्नी के बिच मे कलह होता रहता हैं, तो घर के जितने सदस्य हो उन सबके नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में बिना किसी पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप मंत्र सिद्ध पति वशीकरण या पत्नी वशीकरण एवं गृह कलह नाशक डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क आप कर सकते हैं।

# 100 से अधिक जैन यंत्र

हमारे यहां जैन धर्म के सभी प्रमुख, दुर्लभ एवं शीघ्र प्रभावशाली यंत्र ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के यंत्र कोपर ताम्र पत्र, सिलवर (चांदी) ओर गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। इसके अलावा आपकी आवश्यकता अनुसार आपके द्वारा प्राप्त (चित्र, यंत्र, ड़िज़ाईन) के अनुरुप यंत्र भी बनवाए जाते है. गुरुत्व कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये गये सभी यंत्र अखंडित एवं 22 गेज शुद्ध कोपर(ताम्र पत्र)- 99.99 टच शुद्ध सिलवर (चांदी) एवं 22 केरेट गोल्ड (सोने) मे बनवाए जाते है। यंत्र के विषय मे अधिक जानकारी के लिये हेतु सम्पर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

## द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- ❖ परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- ❖ भाग्योदय यंत्र
- ❖ मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- ❖ राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- ❖ गृहस्थ सुख यंत्र
- ❖ शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- ❖ सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- ❖ आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- ❖ पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- ❖ रोग निवृत्ति यंत्र
- ❖ साधना सिद्धि यंत्र
- ❖ शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

>> **Shop Online** | **Order Now**

- ❖ क्या आपके बच्चे कुसंगती के शिकार हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे आपका कहना नहीं मान रहे हैं?
- ❖ क्या आपके बच्चे घर में अशांति पैदा कर रहे हैं?

घर परिवार में शांति एवं बच्चे को कुसंगती से छुडाने हेतु बच्चे के नाम से गुरुत्व कार्यालत द्वारा शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाले एवं उसे अपने घर में स्थापित कर अल्प पूजा, विधि-विधान से आप विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप तो आप मंत्र सिद्ध वशीकरण कवच एवं एस.एन.डिब्बी बनवाना चाहते हैं, तो संपर्क इस कर सकते हैं।

# नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 4600, 5500, 6400 से 10,900 से अधिक

>> **Shop Online** | **Order Now**

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

# मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

**वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र:** यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

**मूल्य Rs- 325 से 12700 तक**

**श्री हनुमान यंत्र** शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रहमा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुसार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें।

**मूल्य Rs- 910 से 12700 तक**

| विभिन्न देवताओं के यंत्र | | |
|---|---|---|
| गणेश यंत्र | महामृत्युंजय यंत्र | राम रक्षा यंत्र राज |
| गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | महामृत्युंजय कवच यंत्र | राम यंत्र |
| गणेश सिद्ध यंत्र | महामृत्युंजय पूजन यंत्र | द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र |
| एकाक्षर गणपति यंत्र | महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र | विष्णु बीसा यंत्र |
| हरिद्रा गणेश यंत्र | शिव पंचाक्षरी यंत्र | गरुड पूजन यंत्र |
| कुबेर यंत्र | शिव यंत्र | चिंतामणी यंत्र राज |
| श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र | अद्बितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र | चिंतामणी यंत्र |
| दत्तात्रय यंत्र | नृसिंह पूजन यंत्र | स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र |
| दत्त यंत्र | पंचदेव यंत्र | हनुमान पूजन यंत्र |
| आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र | संतान गोपाल यंत्र | हनुमान यंत्र |
| बटुक यंत्र | श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र | संकट मोचन यंत्र |
| व्यंकटेश यंत्र | कृष्ण बीसा यंत्र | वीर साधन पूजन यंत्र |
| कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र | सर्व काम प्रद भैरव यंत्र | दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र |
| **मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र** | | |
| व्यापार वृद्धि कारक यंत्र | अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र | त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र |
| व्यापार वृद्धि यंत्र | विजयराज पंचदशी यंत्र | मधुमेह निवारक यंत्र |
| व्यापार वर्धक यंत्र | विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र | ज्वर निवारण यंत्र |
| व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र | सम्मान दायक यंत्र | रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र |
| भाग्य वर्धक यंत्र | सुख शांति दायक यंत्र | रोग निवारक यंत्र |
| स्वस्तिक यंत्र | बाला यंत्र | तनाव मुक्त बीसा यंत्र |
| सर्व कार्य बीसा यंत्र | बाला रक्षा यंत्र | विद्युत मानस यंत्र |
| कार्य सिद्धि यंत्र | गर्भ स्तम्भन यंत्र | गृह कलह नाशक यंत्र |
| सुख समृद्धि यंत्र | संतान प्राप्ति यंत्र | कलेश हरण बत्तिसा यंत्र |
| सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र | प्रसूता भय नाशक यंत्र | वशीकरण यंत्र |
| सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र | प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र | मोहिनि वशीकरण यंत्र |
| ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र | शांति गोपाल यंत्र | कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र |
| सर्व सिद्धि यंत्र | त्रिशूल बीशा यंत्र | वार्ताली स्तम्भन यंत्र |
| साबर सिद्धि यंत्र | पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके) | वास्तु यंत्र |
| शाबरी यंत्र | बेकारी निवारण यंत्र | श्री मत्स्य यंत्र |
| सिद्धाश्रम यंत्र | षोडशी यंत्र | वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र |
| ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र | अडसठिया यंत्र | प्रेत-बाधा नाशक यंत्र |
| ब्रहमाण्ड साबर सिद्धि यंत्र | अस्सीया यंत्र | भूतादी व्याधिहरण यंत्र |
| कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र | ऋद्धि कारक यंत्र | कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र |
| क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र | मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र | भय नाशक यंत्र |
| श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र | विवाहकर यंत्र | स्वप्न भय निवारक यंत्र |

| | | |
|---|---|---|
| ज्ञान दाता महा यंत्र | लग्न विघ्न निवारक यंत्र | कुदृष्टि नाशक यंत्र |
| काया कल्प यंत्र | लग्न योग यंत्र | श्री शत्रु पराभव यंत्र |
| दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र | दरिद्रता विनाशक यंत्र | शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र |

## मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

| | |
|---|---|
| आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र) | सरस्वती यंत्र |
| महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र) | सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित) |
| नव दुर्गा यंत्र | काली यंत्र |
| नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र) | श्मशान काली पूजन यंत्र |
| नवार्ण बीसा यंत्र | दक्षिण काली पूजन यंत्र |
| चामुंडा बीसा यंत्र ( नवग्रह युक्त) | संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र |
| त्रिशूल बीसा यंत्र | खोडियार यंत्र |
| बगला मुखी यंत्र | खोडियार बीसा यंत्र |
| बगला मुखी पूजन यंत्र | अन्नपूर्णा पूजा यंत्र |
| राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र | एकांक्षी श्रीफल यंत्र |

## मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

| | |
|---|---|
| श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र) | महालक्ष्मयै बीज यंत्र |
| श्री यंत्र (मंत्र रहित) | महालक्ष्मी बीसा यंत्र |
| श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित) | लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र |
| श्री यंत्र (बीसा यंत्र) | लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र |
| श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र | लक्ष्मी गणेश यंत्र |
| श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय) | ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र |
| लक्ष्मी बीसा यंत्र | कनक धारा यंत्र |
| श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र) | वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र) |
| अंकात्मक बीसा यंत्र | |

| ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated) | | ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated) | | ताम्र पत्र पर (Copper) | |
|---|---|---|---|---|---|
| साईज | मूल्य | साईज | मूल्य | साईज | मूल्य |
| 1” X 1” | 550 | 1” X 1” | 370 | 1” X 1” | 325 |
| 2” X 2” | 910 | 2” X 2” | 640 | 2” X 2” | 550 |
| 3” X 3” | 1450 | 3” X 3” | 1050 | 3” X 3” | 910 |
| 4” X 4” | 2350 | 4” X 4” | 1450 | 4” X 4” | 1225 |
| 6” X 6” | 3700 | 6” X 6” | 2800 | 6” X 6” | 2350 |
| 9” X 9” | 9100 | 9” X 9” | 4600 | 9” X 9” | 4150 |
| 12” X12” | 12700 | 12” X12” | 9100 | 12” X12” | 9100 |

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। >> **Shop Online** | Order Now

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

## 11 नवम्बर से 17 नवम्बर 2018 साप्ताहिक पंचांग

| दि | वार | माह | पक्ष | तिथि | समाप्ति | नक्षत्र | समाप्ति | योग | समाप्ति | करण | समाप्ति | चंद्र राशि | समाप्ति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | रवि | कार्तिक | शुक्ल | चतुर्थी | 23:58 | मूल | 24:1 | सुकर्मा | 14:23 | वणिज | 11:06 | धनु | - |
| 12 | सोम | कार्तिक | शुक्ल | पंचमी | 26:8 | पूर्वाषाढ़ | 26:37 | धृति | 14:43 | बव | 12:59 | धनु | - |
| 13 | मंगल | कार्तिक | शुक्ल | षष्ठी | 28:41 | उत्तराषाढ़ | 29:36 | शूल | 15:25 | कौलव | 15:22 | धनु | 09:21 |
| 14 | बुध | कार्तिक | शुक्ल | सप्तमी | - | श्रवण | .... | गंड | 16:21 | गर | 18:03 | मकर | - |
| 15 | गुरु | कार्तिक | शुक्ल | सप्तमी-अष्टमी | 7 तिथि वृद्धि 07:24 | श्रवण | 08:44 | वृद्धि | 17:21 | वणिज | 07:24 | मकर | 22:18 |
| 16 | शुक्र | कार्तिक | शुक्ल | अष्टमी | 10:00 | धनिष्ठा | 11:45 | ध्रुव | 18:11 | बव | 10:00 | कुंभ | - |
| 17 | शनि | कार्तिक | शुक्ल | नवमी | 12:13 | शतभिषा | 14:25 | व्याघात | 18:43 | कौलव | 12:13 | कुंभ | - |

## 11 नवम्बर से 17 नवम्बर 2018 साप्ताहिक व्रत-पर्व-त्यौहार

| दि | वार | माह | पक्ष | तिथि | समाप्ति | प्रमुख व्रत-त्योहार |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | रवि | कार्तिक | शुक्ल | चतुर्थी | 23:58 | वरदविनायक चतुर्थी व्रत (चंद्र.अस्त 19:43 बजे), सूर्यषष्ठी व्रत प्रारम्भ, छठपूजा शुरू-नहाय खाय (बिहा., झार,) |
| 12 | सोम | कार्तिक | शुक्ल | पंचमी | 26:8 | सौभाग्य-लाभ पंचमी, पाण्डव पंचमी, छठ पूजा का दूसरा दिन, छठपूजा का खरना, ज्ञानपंचमी (जैन), |
| 13 | मंगल | कार्तिक | शुक्ल | षष्ठी | 28:41 | षष्ठी छठ पूजा, सूर्यषष्ठी व्रत, प्रतिहारषष्ठी व्रत (मिथि.), डाला छठ, छठ पूजा-उपवास एवं सायंकाल अस्तंगत सूर्य को प्रथम अर्ध्यदान, स्कन्दषष्ठी, |
| 14 | बुध | कार्तिक | शुक्ल | सप्तमी | - | अरुणोदयकाल में उदीयमान सूर्य को द्वितीय अर्ध्यदान, छठ व्रत का पारण, सहस्रार्जुन जयन्ती, सामापूजा पूर्णिमा तक (मिथि.), जगद्धात्री पूजा 3 दिन (प.बं), |
| 15 | गुरु | कार्तिक | शुक्ल | सप्तमी-अष्टमी | 7 तिथि वृद्धि 07:24 | गोपाष्टमी, गोपाल अष्टमी, श्रीदुर्गाष्टमी व्रत, श्रीअन्नपूर्णाष्टमी व्रत, |
| 16 | शुक्र | कार्तिक | शुक्ल | अष्टमी | 10:00 | सूर्य वृश्चिक संक्रांति 18:38 बजे से, |
| 17 | शनि | कार्तिक | शुक्ल | नवमी | 12:13 | अक्षयनवमी व्रत, आंवला नवमी पूजन, माँ कूष्माण्ड नवमी, अनला नवमी (ओड़ीसा), सत्ययुगादि तिथि, श्रीहंस भगवान एवं सनकादि जयंती, जगद्धात्री नवमी महापूजा (प.बंगाल), विष्णु त्रिरात्र प्रतारंभ, |

# राशि रत्न

| मेष राशि: | वृषभ राशि: | मिथुन राशि: | कर्क राशि: | सिंह राशि: | कन्या राशि: |
|---|---|---|---|---|---|
| मूंगा | हीरा | पन्ना | मोती | माणेक | पन्ना |
| **Red Coral (Special)** | **Diamond (Special)** | **Green Emerald (Special)** | **Naturel Pearl (Special)** | **Ruby (Old Berma) (Special)** | **Green Emerald (Special)** |
| 5.25" Rs. 1050 | 10 cent Rs. 4100 | 5.25" Rs. 9100 | 5.25" Rs. 910 | 2.25" Rs. 12500 | 5.25" Rs. 9100 |
| 6.25" Rs. 1250 | 20 cent Rs. 8200 | 6.25" Rs. 12500 | 6.25" Rs. 1250 | 3.25" Rs. 15500 | 6.25" Rs. 12500 |
| 7.25" Rs. 1450 | 30 cent Rs. 12500 | 7.25" Rs. 14500 | 7.25" Rs. 1450 | 4.25" Rs. 28000 | 7.25" Rs. 14500 |
| 8.25" Rs. 1800 | 40 cent Rs. 18500 | 8.25" Rs. 19000 | 8.25" Rs. 1900 | 5.25" Rs. 46000 | 8.25" Rs. 19000 |
| 9.25" Rs. 2100 | 50 cent Rs. 23500 | 9.25" Rs. 23000 | 9.25" Rs. 2300 | 6.25" Rs. 82000 | 9.25" Rs. 23000 |
| 10.25" Rs. 2800 | | 10.25" Rs. 28000 | 10.25" Rs. 2800 | | 10.25" Rs. 28000 |
| ** All Weight In Rati | All Diamond are Full White Colour. | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati |

| तुला राशि: | वृश्चिक राशि: | धनु राशि: | मकर राशि: | कुंभ राशि: | मीन राशि: |
|---|---|---|---|---|---|
| हीरा | मूंगा | पुखराज | नीलम | नीलम | पुखराज |
| **Diamond (Special)** | **Red Coral (Special)** | **Y.Sapphire (Special)** | **B.Sapphire (Special)** | **B.Sapphire (Special)** | **Y.Sapphire (Special)** |
| 10 cent Rs. 4100 | 5.25" Rs. 1050 | 5.25" Rs. 30000 | 5.25" Rs. 30000 | 5.25" Rs. 30000 | 5.25" Rs. 30000 |
| 20 cent Rs. 8200 | 6.25" Rs. 1250 | 6.25" Rs. 37000 | 6.25" Rs. 37000 | 6.25" Rs. 37000 | 6.25" Rs. 37000 |
| 30 cent Rs. 12500 | 7.25" Rs. 1450 | 7.25" Rs. 55000 | 7.25" Rs. 55000 | 7.25" Rs. 55000 | 7.25" Rs. 55000 |
| 40 cent Rs. 18500 | 8.25" Rs. 1800 | 8.25" Rs. 73000 | 8.25" Rs. 73000 | 8.25" Rs. 73000 | 8.25" Rs. 73000 |
| 50 cent Rs. 23500 | 9.25" Rs. 2100 | 9.25" Rs. 91000 | 9.25" Rs. 91000 | 9.25" Rs. 91000 | 9.25" Rs. 91000 |
| | 10.25" Rs. 2800 | 10.25" Rs.108000 | 10.25" Rs.108000 | 10.25" Rs.108000 | 10.25" Rs.108000 |
| All Diamond are Full White Colour. | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati | ** All Weight In Rati |

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

# श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

**श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के साथ व्यक्तिको दृढ़ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

**श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्‍भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

**श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्‍वितीय स्थान स्थापित करें।

**श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्‍भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुसार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

## श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

**मूलय मात्र:** **2350** >>Order Now

मूल्य:- Rs. 910 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध >> **Shop Online**

# जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची

| | |
|---|---|
| श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र | श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र |
| श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र | सर्वतो भद्र यंत्र |
| कल्पवृक्ष यंत्र | सर्व संपत्तिकर यंत्र |
| चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र | सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र) |
| चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र) | ऋषि मंडल यंत्र |
| चिंतामणी चक्र यंत्र | जगदवल्लभ कर यंत्र |
| श्री चक्रेश्वरी यंत्र | ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र |
| श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र | ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र |
| श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र) | विषम विष निग्रह कर यंत्र |
| श्री पद्मावती यंत्र | क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र |
| श्री पद्मावती बीसा यंत्र | बृहच्चक्र यंत्र |
| श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र | वंध्या शब्दापह यंत्र |
| पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र | मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र |
| श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र | कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र |
| श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र | बालग्रह पीडा निवारण यंत्र |
| श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र | लधुदेव कुल यंत्र |
| भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक) | नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र |
| मणिभद्र यंत्र | उवसग्गहरं यंत्र |
| श्री यंत्र | श्री पंच मंगल महाश्रुत स्कंध यंत्र |
| श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र | ह्रींकार मय बीज मंत्र |
| श्री लक्ष्मीकर यंत्र | वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र |
| लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र | विद्या यंत्र |
| महाविजय यंत्र | सौभाग्यकर यंत्र |
| विजयराज यंत्र | डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र |
| विजय पतका यंत्र | भूतादि निग्रह कर यंत्र |
| विजय यंत्र | ज्वर निग्रह कर यंत्र |
| सिद्धचक्र महायंत्र | शाकिनी निग्रह कर यंत्र |
| दक्षिण मुखाय शंख यंत्र | आपत्ति निवारण यंत्र |
| दक्षिण मुखाय यंत्र | शत्रुमुख स्तंभन यंत्र |

# श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र

## (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)

घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऎश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं। **मूल्य:- Rs. 2350 से Rs. 12700 तक उप्लब्द्ध**

# अमोघ महामृत्युंजय कवच

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच व उल्लेखित अन्य सामग्रीयों को शास्त्रोक्त विधि-विधान से विद्वान ब्राह्मणो द्वारा **सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र** जप एवं दशांश हवन द्वारा निर्मित किया जाता हैं इस लिए कवच अत्यंत प्रभावशाली होता हैं। >> Order Now

अमोद्य् महामृत्युंजय कवच
कवच बनवाने हेतु:
अपना नाम, पिता-माता का नाम,
गोत्र, एक नया फोटो भेजे

# राशी रत्न एवं उपरत्न

सभी साईज एवं मूल्य व क्वालिटि के असली नवरत्न एवं उपरत्न भी उपलब्ध हैं।

## विशेष यंत्र

हमारें यहां सभी प्रकार के यंत्र सोने-चांदि-ताम्बे में आपकी आवश्यक्ता के अनुसार किसी भी भाषा/धर्म के यंत्रो को आपकी आवश्यक डिजाईन के अनुसार २२ गेज शुद्ध ताम्बे में अखंडित बनाने की विशेष सुविधाएं उपलब्ध हैं।

हमारे यहां सभी प्रकार के रत्न एवं उपरत्न व्यापारी मूल्य पर उपलब्ध हैं। ज्योतिष कार्य से जुडे बधु/बहन व रत्न व्यवसाय से जुडे लोगो के लिये विशेष मूल्य पर रत्न व अन्य सामग्रीया व अन्य सुविधाएं उपलब्ध हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
**Shop Online:- www.gurutvakaryalay.com**

## 11 नवम्बर से 17 नवम्बर 2018 -विशेष योग

| कार्य सिद्धि योग | | | |
|---|---|---|---|
| 11 | प्रातः 05:50 से रात 12:03 तक | | |
| **त्रिपुष्कर योग (तीनगुना फल दायक )** | | | |
| 14 | प्रातः 04:22 से प्रातः 05:38 तक | | |
| **विघ्नकारक भद्रा** | | | |
| 11 | प्रातः 10:54 से रात 11:44 तक (पाताल) | 15 | प्रातः 07:04 से रात 08:24 तक (पृथ्वी) |

**योग फल :**

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोंक्त मत से विघ्नकारक भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

## दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

| | गुलिक काल (शुभ) | यम काल (अशुभ) | राहु काल (अशुभ) |
|---|---|---|---|
| वार | समय अवधि | समय अवधि | समय अवधि |
| रविवार | 03:00 से 04:30 | 12:00 से 01:30 | 04:30 से 06:00 |
| सोमवार | 01:30 से 03:00 | 10:30 से 12:00 | 07:30 से 09:00 |
| मंगलवार | 12:00 से 01:30 | 09:00 से 10:30 | 03:00 से 04:30 |
| बुधवार | 10:30 से 12:00 | 07:30 से 09:00 | 12:00 से 01:30 |
| गुरुवार | 09:00 से 10:30 | 06:00 से 07:30 | 01:30 से 03:00 |
| शुक्रवार | 07:30 से 09:00 | 03:00 से 04:30 | 10:30 से 12:00 |
| शनिवार | 06:00 से 07:30 | 01:30 से 03:00 | 09:00 से 10:30 |

## दिन के चौघडिये

| समय | रविवार | सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 06:00 से 07:30 | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल |
| 07:30 से 09:00 | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ |
| 09:00 से 10:30 | लाभ | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग |
| 10:30 से 12:00 | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल | उद्वेग |
| 12:00 से 01:30 | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल |
| 01:30 से 03:00 | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ |
| 03:00 से 04:30 | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत |
| 04:30 से 06:00 | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल |

## रात के चौघडिये

| समय | रविवार | सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 06:00 से 07:30 | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ |
| 07:30 से 09:00 | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल | उद्वेग |
| 09:00 से 10:30 | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ |
| 10:30 से 12:00 | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत |
| 12:00 से 01:30 | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल |
| 01:30 से 03:00 | लाभ | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग |
| 03:00 से 04:30 | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चल | काल |
| 04:30 से 06:00 | शुभ | चल | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ |

शास्त्रोक्त मत के अनुसार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

**नोट**: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

## चौघडिये के स्वामी ग्रह

| शुभ चौघडिया | | मध्यम चौघडिया | | अशुभ चौघड़िया | |
|---|---|---|---|---|---|
| चौघडिया | स्वामी ग्रह | चौघडिया | स्वामी ग्रह | चौघडिया | स्वामी ग्रह |
| शुभ | गुरु | चर | शुक्र | उद्वेग | सूर्य |
| अमृत | चंद्रमा | | | काल | शनि |
| लाभ | बुध | | | रोग | मंगल |

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

| दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | 1.घं | 2.घं | 3.घं | 4.घं | 5.घं | 6.घं | 7.घं | 8.घं | 9.घं | 10.घं | 11.घं | 12.घं |
| रविवार | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि |
| सोमवार | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य |
| मंगलवार | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र |
| बुधवार | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल |
| गुरुवार | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध |
| शुक्रवार | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु |
| शनिवार | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र |
| रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक | | | | | | | | | | | | |
| रविवार | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध |
| सोमवार | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु |
| मंगलवार | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र |
| बुधवार | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि |
| गुरुवार | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य |
| शुक्रवार | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र |
| शनिवार | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल | सूर्य | शुक्र | बुध | चंद्र | शनि | गुरु | मंगल |

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

**विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।**

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

# सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

**ज्योतिष** विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रहमांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रहमांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

**कवच के लाभ :**

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

**नोट:-** पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।



## Declaration Notice

- We do not accept liability for any out of date or incorrect information.
- We will not be liable for your any indirect consequential loss, loss of profit,
- If you will cancel your order for any article we can not any amount will be refunded or Exchange.
- We are keepers of secrets. We honour our clients' rights to privacy and will release no information about our any other clients' transactions with us.
- Our ability lies in having learned to read the subtle spiritual energy, Yantra, mantra and promptings of the natural and spiritual world.
- Our skill lies in communicating clearly and honestly with each client.
- Our all kawach, yantra and any other article are prepared on the Principle of Positiv energy, our Article dose not produce any bad energy.

## Our Goal

- Here Our goal has The classical Method-Legislation with Proved by specific with fiery chants prestigious full consciousness (Puarn Praan Pratisthit) Give miraculous powers & Good effect All types of Yantra, Kavach, Rudraksh, preciouse and semi preciouse Gems stone deliver on your door step.

# मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते है। अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता है।

❖ क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच? ❖ उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं ❖ कोई विशेष निति-नियम नहीं ❖ कोई बुरा प्रभाव नहीं

## मंत्र सिद्ध कवच सूचि

| कवच | मूल्य | कवच | मूल्य |
|---|---|---|---|
| राज राजेश्वरी कवच<br>Raj Rajeshwari Kawach ........................................ | 11000 | विष्णु बीसा कवच<br>Vishnu Visha Kawach ........................................ | 2350 |
| अमोघ महामृत्युंजय कवच<br>Amogh Mahamrutyunjay Kawach ........................ | 10900 | रामभद्र बीसा कवच<br>Ramabhadra Visha Kawach ................................ | 2350 |
| दस महाविद्या कवच<br>Dus Mahavidhya Kawach ........................................ | 7300 | कुबेर बीसा कवच<br>Kuber Visha Kawach ........................................ | 2350 |
| श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि प्रद कवच<br>Shri Ghantakarn Mahavir Sarv Siddhi Prad Kawach.. | 6400 | गरुड बीसा कवच<br>Garud Visha Kawach ........................................ | 2350 |
| सकल सिद्धि प्रद गायत्री कवच<br>Sakal Siddhi Prad Gayatri Kawach ........................ | 6400 | लक्ष्मी बीसा कवच<br>Lakshmi Visha Kawach ........................................ | 2350 |
| नवदुर्गा शक्ति कवच<br>Navdurga Shakiti Kawach ........................................ | 6400 | सिंह बीसा कवच<br>Sinha Visha Kawach ........................................ | 2350 |
| रसायन सिद्धि कवच<br>Rasayan Siddhi Kawach ........................................ | 6400 | नर्वाण बीसा कवच<br>Narvan Visha Kawach ........................................ | 2350 |
| पंचदेव शक्ति कवच<br>Pancha Dev Shakti Kawach ........................................ | 6400 | संकट मोचिनी कालिका सिद्धि कवच<br>Sankat Mochinee Kalika Siddhi Kawach ................ | 2350 |
| सर्व कार्य सिद्धि कवच<br>Sarv Karya Siddhi Kawach ........................................ | 5500 | राम रक्षा कवच<br>Ram Raksha Kawach ........................................ | 2350 |
| सुवर्ण लक्ष्मी कवच<br>Suvarn Lakshmi Kawach ........................................ | 4600 | नारायण रक्षा कवच<br>Narayan Raksha Kavach ........................................ | 2350 |
| स्वर्णाकर्षण भैरव कवच<br>Swarnakarshan Bhairav Kawach ................................ | 4600 | हनुमान रक्षा कवच<br>Hanuman Raksha Kawach ........................................ | 2350 |
| कालसर्प शांति कवच<br>Kalsharp Shanti Kawach ........................................ | 3700 | भैरव रक्षा कवच<br>Bhairav Raksha Kawach ........................................ | 2350 |
| विलक्षण सकल राज वशीकरण कवच<br>Vilakshan Sakal Raj Vasikaran Kawach ................ | 3250 | शनि साड़ेसाती और ढैया कष्ट निवारण कवच<br>Shani Sadesatee aur Dhaiya Kasht Nivaran Kawach ..... | 2350 |
| इष्ट सिद्धि कवच<br>Isht Siddhi Kawach ........................................ | 2800 | श्रापित योग निवारण कवच<br>Sharapit Yog Nivaran Kawach ................................ | 1900 |
| परदेश गमन और लाभ प्राप्ति कवच<br>Pardesh Gaman Aur Labh Prapti Kawach ................ | 2350 | विष योग निवारण कवच<br>Vish Yog Nivaran Kawach ........................................ | 1900 |
| श्रीदुर्गा बीसा कवच<br>Durga Visha Kawach ........................................ | 2350 | सर्वजन वशीकरण कवच<br>Sarvjan Vashikaran Kawach ................................ | 1450 |
| कृष्ण बीसा कवच<br>Krushna Bisa Kawach ........................................ | 2350 | सिद्धि विनायक कवच<br>Siddhi Vinayak Ganapati Kawach ................................ | 1450 |
| अष्ट विनायक कवच<br>Asht Vinayak Kawach ........................................ | 2350 | सकल सम्मान प्राप्ति कवच<br>Sakal Samman Praapti Kawach ................................ | 1450 |
| आकर्षण वृद्धि कवच<br>Aakarshan Vruddhi Kawach ........................................ | 1450 | स्वप्न भय निवारण कवच<br>Swapna Bhay Nivaran Kawach ................................ | 1050 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| वशीकरण नाशक कवच<br>Vasikaran Nashak Kawach ……..……………………. | 1450 | सरस्वती कवच (कक्षा +10 के लिए)<br>Saraswati Kawach (For Class +10) ………………….. | 1050 |
| प्रीति नाशक कवच<br>Preeti Nashak Kawach ……..………………………. | 1450 | सरस्वती कवच (कक्षा 10 तकके लिए)<br>Saraswati Kawach (For up to Class 10) …………….. | 910 |
| चंडाल योग निवारण कवच<br>Chandal Yog Nivaran Kawach ……..……………….. | 1450 | वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए)<br>Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) ……………. | 1250 |
| ग्रहण योग निवारण कवच<br>Grahan Yog Nivaran Kawach ……..………………….. | 1450 | पत्नी वशीकरण कवच<br>Patni Vasikaran Kawach ……………………………... | 820 |
| मांगलिक योग निवारण कवच (कुजा योग )<br>Magalik Yog Nivaran Kawach (Kuja Yoga) ………… | 1450 | पति वशीकरण कवच<br>Pati Vasikaran Kawach ……………………………….. | 820 |
| अष्ट लक्ष्मी कवच<br>Asht Lakshmi Kawach ……..………………………... | 1250 | वशीकरण कवच ( 1 व्यक्ति के लिए)<br>Vashikaran Kawach (For 1 Person) …………………… | 820 |
| आकस्मिक धन प्राप्ति कवच<br>Akashmik Dhan Prapti Kawach ……..…………….. | 1250 | सुदर्शन बीसा कवच<br>Sudarshan Visha Kawach ……..……………………..….. | 910 |
| स्पे.व्यापार वृद्धि कवच<br>Special Vyapar Vruddhi Kawach ……..……………… | 1250 | महा सुदर्शन कवच<br>Mahasudarshan Kawach ……..……………...…………. | 910 |
| धन प्राप्ति कवच<br>Dhan Prapti Kawach ……..…………………………... | 1250 | तंत्र रक्षा कवच<br>Tantra Raksha Kawach ……………………………….. | 910 |
| कार्य सिद्धि कवच<br>Karya Siddhi Kawach ……..………………………… | 1250 | वशीकरण कवच (2-3 व्यक्तिके लिए)<br>Vashikaran Kawach For (For 2-3 Person) ……………. | 1250 |
| भूमिलाभ कवच<br>Bhumilabh Kawach ……..……………………………. | 1250 | पत्नी वशीकरण कवच<br>Patni Vasikaran Kawach ……………………………... | 820 |
| नवग्रह शांति कवच<br>Navgrah Shanti Kawach ……..………………………. | 1250 | पति वशीकरण कवच<br>Pati Vasikaran Kawach ……………………………….. | 820 |
| संतान प्राप्ति कवच<br>Santan Prapti Kawach ……..…………………………. | 1250 | वशीकरण कवच ( 1 व्यक्ति के लिए)<br>Vashikaran Kawach (For 1 Person) …………………… | 820 |
| कामदेव कवच<br>Kamdev Kawach ……..………………………………. | 1250 | सुदर्शन बीसा कवच<br>Sudarshan Visha Kawach ……..……………………..….. | 910 |
| हंस बीसा कवच<br>Hans Visha Kawach ……..……………………………. | 1250 | महा सुदर्शन कवच<br>Mahasudarshan Kawach ……..……………...…………. | 910 |
| पदौन्नति कवच<br>Padounnati Kawach ……..……………………………. | 1250 | तंत्र रक्षा कवच<br>Tantra Raksha Kawach ……………………………….. | 910 |
| ऋण / कर्ज मुक्ति कवच<br>Rin / Karaj Mukti Kawach ……..…………………….. | 1250 | त्रिशूल बीसा कवच<br>Trishool Visha Kawach ……..…………………………... | 910 |
| शत्रु विजय कवच<br>Shatru Vijay Kawach …………………………………. | 1050 | व्यापर वृद्धि कवच<br>Vyapar Vruddhi Kawach …………………………….... | 910 |
| विवाह बाधा निवारण कवच<br>Vivah Badha Nivaran Kawach ……………………….. | 1050 | सर्व रोग निवारण कवच<br>Sarv Rog Nivaran Kawach …………………………... | 910 |
| स्वस्तिक बीसा कवच<br>Swastik Visha Kawach ……..………………………. | 1050 | शारीरिक शक्ति वर्धक कवच<br>Sharirik Shakti Vardhak Kawach ..……………………... | 910 |
| मस्तिष्क पृष्टि वर्धक कवच<br>Mastishk Prushti Vardhak Kawach …………………… | 820 | सिद्ध शुक्र कवच<br>Siddha Shukra Kawach ……………………………….. | 820 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| वाणी पृष्टि वर्धक कवच<br>Vani Prushti Vardhak Kawach ............................. | 820 | सिद्ध शनि कवच<br>Siddha Shani Kawach ......................................... | 820 |
| कामना पूर्ति कवच<br>Kamana Poorti Kawach .................................... | 820 | सिद्ध राहु कवच<br>Siddha Rahu Kawach ......................................... | 820 |
| विरोध नाशक कवच<br>Virodh Nashan Kawach .................................... | 820 | सिद्ध केतु कवच<br>Siddha Ketu Kawach ......................................... | 820 |
| सिद्ध सूर्य कवच<br>Siddha Surya Kawach ........................................ | 820 | रोजगार वृद्धि कवच<br>Rojgar Vruddhi Kawach ...................................... | 730 |
| सिद्ध चंद्र कवच<br>Siddha Chandra Kawach .................................. | 820 | विघ्न बाधा निवारण कवच<br>Vighna Badha Nivaran Kawah .............................. | 730 |
| सिद्ध मंगल कवच (कुजा)<br>Siddha Mangal Kawach (Kuja) ........................... | 820 | नज़र रक्षा कवच<br>Najar Raksha Kawah ........................................... | 730 |
| सिद्ध बुध कवच<br>Siddha Bhudh Kawach ...................................... | 820 | रोजगार प्राप्ति कवच<br>Rojagar Prapti Kawach ...................................... | 730 |
| सिद्ध गुरु कवच<br>Siddha Guru Kawach ...................................... | 820 | दुर्भाग्य नाशक कवच<br>Durbhagya Nashak .......................................... | 640 |

उपरोक्त कवच के अलावा अन्य समस्या विशेष के समाधान हेतु एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु कवच का निर्माण किया जाता हैं। कवच के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। *कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये

>> Shop Online | Order Now

# GURUTVA KARYALAY

Call Us - 9338213418, 9238328785,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and www.gurutvajyotish.com

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

# Gemstone Price List

| NAME OF GEM STONE | | GENERAL | MEDIUM FINE | FINE | SUPER FINE | SPECIAL |
|---|---|---|---|---|---|---|
| Emerald | (पन्ना) | 200.00 | 500.00 | 1200.00 | 1900.00 | 2800.00 & above |
| Yellow Sapphire | (पुखराज) | 550.00 | 1200.00 | 1900.00 | 2800.00 | 4600.00 & above |
| **Yellow Sapphire** Bangkok | (बैंकोक पुखराज) | 550.00 | 1200.00 | 1900.00 | 2800.00 | 4600.00 & above |
| Blue Sapphire | (नीलम) | 550.00 | 1200.00 | 1900.00 | 2800.00 | 4600.00 & above |
| White Sapphire | (सफ़ेद पुखराज) | 1000.00 | 1200.00 | 1900.00 | 2800.00 | 4600.00 & above |
| **Bangkok Black Blue** | **(बैंकोक नीलम)** | 100.00 | 150.00 | 190.00 | 550.00 | 1000.00 & above |
| Ruby | (माणिक) | 100.00 | 190.00 | 370.00 | 730.00 | 1900.00 & above |
| Ruby Berma | (बर्मा माणिक) | 5500.00 | 6400.00 | 8200.00 | 10000.00 | 21000.00 & above |
| Speenal | (नरम माणिक/लालडी) | 300.00 | 600.00 | 1200.00 | 2100.00 | 3200.00 & above |
| Pearl | (मोति) | 30.00 | 60.00 | 90.00 | 120.00 | 280.00 & above |
| Red Coral (4 रति तक) | (लाल मूंगा) | 125.00 | 190.00 | 280.00 | 370.00 | 460.00 & above |
| Red Coral (4 रति से उपर) | (लाल मूंगा) | 190.00 | 280.00 | 370.00 | 460.00 | 550.00 & above |
| White Coral | (सफ़ेद मूंगा) | 73.00 | 100.00 | 190.00 | 280.00 | 460.00 & above |
| Cat's Eye | (लहसुनिया) | 25.00 | 45.00 | 90.00 | 120.00 | 190.00 & above |
| Cat's Eye ODISHA | (उडिसा लहसुनिया) | 280.00 | 460.00 | 730.00 | 1000.00 | 1900.00 & above |
| Gomed | (गोमेद) | 19.00 | 28.00 | 45.00 | 100.00 | 190.00 & above |
| Gomed CLN | (सिलोनी गोमेद) | 190.00 | 280.00 | 460.00 | 730.00 | 1000.00 & above |
| Zarakan | (जरकन) | 550.00 | 730.00 | 820.00 | 1050.00 | 1250.00 & above |
| Aquamarine | (बेरुज) | 210.00 | 320.00 | 410.00 | 550.00 | 730.00 & above |
| Lolite | (नीली) | 50.00 | 120.00 | 230.00 | 390.00 | 500.00 & above |
| Turquoise | (फ़िरोजा) | 100.00 | 145.00 | 190.00 | 280.00 | 460.00 & above |
| Golden Topaz | (सुनहला) | 28.00 | 46.00 | 90.00 | 120.00 | 190.00 & above |
| Real Topaz | (उडिसा पुखराज/टोपज) | 100.00 | 190.00 | 280.00 | 460.00 | 640.00 & above |
| **Blue Topaz** | **(नीला टोपज)** | 100.00 | 190.00 | 280.00 | 460.00 | 640.00 & above |
| White Topaz | (सफ़ेद टोपज) | 60.00 | 90.00 | 120.00 | 240.00 | 410.00& above |
| Amethyst | (कटेला) | 28.00 | 46.00 | 90.00 | 120.00 | 190.00 & above |
| Opal | (उपल) | 28.00 | 46.00 | 90.00 | 190.00 | 460.00 & above |
| Garnet | (गारनेट) | 28.00 | 46.00 | 90.00 | 120.00 | 190.00 & above |
| Tourmaline | (तुर्मलीन) | 120.00 | 140.00 | 190.00 | 300.00 | 730.00 & above |
| Star Ruby | (सुर्यकान्त मणि) | 45.00 | 75.00 | 90.00 | 120.00 | 190.00 & above |
| Black Star | (काला स्टार) | 15.00 | 30.00 | 45.00 | 60.00 | 100.00 & above |
| Green Onyx | (ओनेक्स) | 10.00 | 19.00 | 28.00 | 55.00 | 100.00 & above |
| Lapis | (लाजर्वत) | 15.00 | 28.00 | 45.00 | 100.00 | 190.00 & above |
| Moon Stone | (चन्द्रकान्त मणि) | 12.00 | 19.00 | 28.00 | 55.00 | 190.00 & above |
| Rock Crystal | (स्फ़टिक) | 19.00 | 46.00 | 15.00 | 30.00 | 45.00 & above |
| Kidney Stone | (दाना फ़िरंगी) | 09.00 | 11.00 | 15.00 | 19.00 | 21.00 & above |
| Tiger Eye | (टाइगर स्टोन) | 03.00 | 05.00 | 10.00 | 15.00 | 21.00 & above |
| Jade | (मरगच) | 12.00 | 19.00 | 23.00 | 27.00 | 45.00 & above |
| Sun Stone | (सन सितारा) | 12.00 | 19.00 | 23.00 | 27.00 | 45.00 & above |

**Note : Bangkok** (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus


## GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com

# GURUTVA KARYALAY

| | YANTRA LIST | EFFECTS |
|---|---|---|
| | **Our Splecial Yantra** | |
| 1 | 12 – YANTRA SET | For all Family Troubles |
| 2 | VYAPAR VRUDDHI YANTRA | For Business Development |
| 3 | BHOOMI LABHA YANTRA | For Farming Benefits |
| 4 | TANTRA RAKSHA YANTRA | For Protection Evil Sprite |
| 5 | AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA | For Unexpected Wealth Benefits |
| 6 | PADOUNNATI YANTRA | For Getting Promotion |
| 7 | RATNE SHWARI YANTRA | For Benefits of Gems & Jewellery |
| 8 | BHUMI PRAPTI YANTRA | For Land Obtained |
| 9 | GRUH PRAPTI YANTRA | For Ready Made House |
| 10 | KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA | - |
| | **Shastrokt Yantra** | |
| 11 | AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA | Blessing of Durga |
| 12 | BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL) | Win over Enemies |
| 13 | BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL) | Blessing of Bagala Mukhi |
| 14 | BHAGYA VARDHAK YANTRA | For Good Luck |
| 15 | BHAY NASHAK YANTRA | For Fear Ending |
| 16 | CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta) | Blessing of Chamunda & Navgraha |
| 17 | CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA | Blessing of Chhinnamasta |
| 18 | DARIDRA VINASHAK YANTRA | For Poverty Ending |
| 19 | DHANDA POOJAN YANTRA | For Good Wealth |
| 20 | DHANDA YAKSHANI YANTRA | For Good Wealth |
| 21 | GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra) | Blessing of Lord Ganesh |
| 22 | GARBHA STAMBHAN YANTRA | For Pregnancy Protection |
| 23 | GAYATRI BISHA YANTRA | Blessing of Gayatri |
| 24 | HANUMAN YANTRA | Blessing of Lord Hanuman |
| 25 | JWAR NIVARAN YANTRA | For Fewer Ending |
| 26 | JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA | For Astrology & Spritual Knowlage |
| 27 | KALI YANTRA | Blessing of Kali |
| 28 | KALPVRUKSHA YANTRA | For Fullfill your all Ambition |
| 29 | KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA) | Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga |
| 30 | KANAK DHARA YANTRA | Blessing of Maha Lakshami |
| 31 | KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA | - |
| 32 | KARYA SHIDDHI YANTRA | For Successes in work |
| 33 | • SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA | For Successes in all work |
| 34 | KRISHNA BISHA YANTRA | Blessing of Lord Krishna |
| 35 | KUBER YANTRA | Blessing of Kuber (Good wealth) |
| 36 | LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA | For Obstaele Of marriage |
| 37 | LAKSHAMI GANESH YANTRA | Blessing of Lakshami & Ganesh |
| 38 | MAHA MRUTYUNJAY YANTRA | For Good Health |
| 39 | MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA | Blessing of Shiva |
| 40 | MANGAL YANTRA ( TRIKON 21 BEEJ MANTRA) | For Fullfill your all Ambition |
| 41 | MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA | For Marriage with choice able Girl |
| 42 | NAVDURGA YANTRA | Blessing of Durga |

| | YANTRA LIST | EFFECTS |
|---|---|---|
| 43 | NAVGRAHA SHANTI YANTRA | For good effect of 9 Planets |
| 44 | NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA | For good effect of 9 Planets |
| 45 | • SURYA YANTRA | Good effect of Sun |
| 46 | • CHANDRA YANTRA | Good effect of Moon |
| 47 | • MANGAL YANTRA | Good effect of Mars |
| 48 | • BUDHA YANTRA | Good effect of Mercury |
| 49 | • GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA) | Good effect of Jyupiter |
| 50 | • SUKRA YANTRA | Good effect of Venus |
| 51 | • SHANI YANTRA (COPER & STEEL) | Good effect of Saturn |
| 52 | • RAHU YANTRA | Good effect of Rahu |
| 53 | • KETU YANTRA | Good effect of Ketu |
| 54 | PITRU DOSH NIVARAN YANTRA | For Ancestor Fault Ending |
| 55 | PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA | For Pregnancy Pain Ending |
| 56 | RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA | For Benefits of State & Central Gov |
| 57 | RAM YANTRA | Blessing of Ram |
| 58 | RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA | Blessing of Riddhi-Siddhi |
| 59 | ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA | For Disease- Pain- Poverty Ending |
| 60 | SANKAT MOCHAN YANTRA | For Trouble Ending |
| 61 | SANTAN GOPAL YANTRA | Blessing Lorg Krishana For child acquisition |
| 62 | SANTAN PRAPTI YANTRA | For child acquisition |
| 63 | SARASWATI YANTRA | Blessing of Sawaswati (For Study & Education) |
| 64 | SHIV YANTRA | Blessing of Shiv |
| 65 | SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA) | Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace |
| 66 | SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA | Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth |
| 67 | SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA | For Bad Dreams Ending |
| 68 | VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA | For Vehicle Accident Ending |
| 69 | VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA) | Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes |
| 70 | VASTU YANTRA | For Bulding Defect Ending |
| 71 | VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA | For Education- Fame- state Award Winning |
| 72 | VISHNU BISHA YANTRA | Blessing of Lord Vishnu (Narayan) |
| 73 | VASI KARAN YANTRA | Attraction For office Purpose |
| 74 | • MOHINI VASI KARAN YANTRA | Attraction For Female |
| 75 | • PATI VASI KARAN YANTRA | Attraction For Husband |
| 76 | • PATNI VASI KARAN YANTRA | Attraction For Wife |
| 77 | • VIVAH VASHI KARAN YANTRA | Attraction For Marriage Purpose |

**Yantra Available @:-** Rs- 325 to 12700 and Above…..

# सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

**(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)**

FREE
E CIRCULAR

# गुरुत्व ज्योतिष साप्ताहिक ई-पत्रिका

## 11 नवम्बर से 17 नवम्बर 2018

**संपादक**

चिंतन जोशी

**संपर्क**

# गुरुत्व ज्योतिष विभाग

# गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ODISHA) INDIA

**फोन**

91+9338213418, 91+9238328785

**ईमेल**

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

**वेब**

www.gurutvakaryalay.com

www.gurutvajyotish.com

www.shrigems.com

http://gk.yolasite.com/

www.gurutvakaryalay.blogspot.com

# हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ODISHA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Visit Us: www.gurutvakaryalay.com | www.gurutvajyotish.com | www.gurutvakaryalay.blogspot.com
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

# GURUTVA JYOTISH

# Weekly

# 11-Nov to 17-Nov 2018